हिंदी

कक्षा 2

सत्र 2021–22

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1 QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

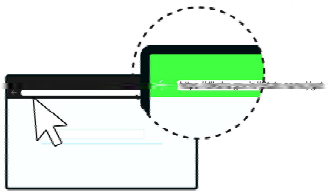

2 ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3 सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4 प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष – 2021

मार्गदर्शक

संचालक

एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.,रायपुर

सहयोग

प्रो. रमाकांत अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय),
डॉ. हृदयकांत दीवान (विद्या भवन, उदयपुर)
श्री रोहित धनकर (दिगंतर, जयपुर)

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

समन्वयक

डॉ. आर.के.वर्मा

सम्पादक मण्डल

श्री राजेन्द्र पाण्डेय, स्व.डॉ.सी.एल.मिश्रा, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर,
श्रीमती विद्या डांगे, श्रीमती नम्रता सिंह,श्री लखन दास, श्री रघुनाथ प्रसाद सिन्हा,
श्रीमती खेमीन साहू, संध्या मिश्रा,

लेखक दल

राजेन्द्र पाण्डेय, सुधा खरे, अनूप नाथ योगी,सच्चिदानंद शास्त्री, दुर्गेश वैष्णव, छलिया वैष्णव,
शोभा शंकर नागदा,रमेश शर्मा,दिनेश गौतम, विनय शरण सिंह, डॉ. राजेश शर्मा,रीता
श्रीवास्तव, द्रोण साहू, पुष्पा शुक्ला, राजपाल कौर, लक्ष्मी सोनी, श्रीदेवी, मनोज चंद्राकर, मनोज
साहू,खोजन दास डिडौरी

अनुवादक

श्रीमती नम्रता सिंह, श्री विनय शरण सिंह, श्री लखन लाल सिरमौर,
श्री रघुनाथ प्रसाद सिन्हा, श्रीमती खेमिन साहू, संध्या मिश्रा

स्रोत केन्द्र – जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खैरागढ़
जिला परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, राजनांदगांव

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, सुश्री अनीता वर्मा, मो. इकराम, श्री राजेश सेन

आवरण एवं ले आउट डिजाइनिंग

रेखराज चौरागड़े, सुरेश साहू, मुकुंद साहू

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

आमुख

छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के साथ ही यह आवश्यक हो गया था कि नवगठित राज्य के संदर्भ में शिक्षा के सरोकारों का पुनः निर्धारण किया जाए। आवश्यकता अनुसार पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों का नवीनीकरण किया जाए। प्रदेश की इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर सत्र 2003–04 में नई शिक्षा योजना के साथ नई पाठ्यपुस्तकों के सृजन का कार्य प्रारम्भ किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग और मानव अधिकार आयोग प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बच्चों के बस्ते में बोझ से चिंतित है। छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग भी इस चिंता को दूर करने के लिए प्रयासरत था। अंततः इस वर्ष उसकी पहल पर पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की एक नई प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। शासन द्वारा लिए गए निर्णय के फलस्वरूप इस वर्ष कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों के लिए हिन्दी, गणित और सामान्य अंग्रेजी की पृथक–पृथक पुस्तक होगी। इन पुस्तकों में वर्कबुक समावेशित है, अतः इन कक्षाओं के लिए पृथक से वर्कबुक बनाने की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई।

पाठ्यपुस्तक के विकास में बच्चों की अभिरुचियों को ध्यान में रखकर सीखने की गतिविधियों का सृजन एवं एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी पुस्तिका रिमझिम–2 के कुछ पाठों का चयन किया गया है। विद्यालयों की परिस्थितियों व सीखने के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए समूह अधिगम एवं स्व अधिगम पर बल देने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही पर्यावरणीय संचेतना, लिंग संचेतना आदि पहलुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक संयोजित की गई है। पाठों में दी गई पाठ्यसामग्री एवं अभ्यास कार्य, भाषा शिक्षण की नवीन अवधारणाओं एवं लर्निंग आउट कम पर आधारित हैं। हम आशा करते हैं कि शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकेंगे।

अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया रोचक और संपूर्ण कैसे बने इस पर सतत् प्रयास हो रहे हैं। यह पुस्तक भी इसी दिशा में एक कदम है।

इस पुस्तक की रचना शिक्षण के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के उद्देश्य को सामने रखकर की गई है। इस पुस्तक में, आसपास होने वाली सहज क्रियाओं में भी भाषा के गणित के रूप को देखा जाएगा। इन क्रियाओं को रोचक गतिविधियों के साथ स्वयं करते हुए जब बच्चे आगे बढ़ेंगे तो अवश्य ही उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

इस पुस्तक में हर अवधारणा की शुरूआत संदर्भ से की गई है। बच्चे पहले से जितना जानते हैं उसका उपयोग उनके सीखने में हो, और वे अपने अनुभवों में कुछ नया जोड़ते चलें, फिर नई परिस्थितियों में उसका प्रयोग करें और धीरे–धीरे सीखते चलें, सीखने की इस प्रक्रिया को इस पुस्तक का आधार बनाया गया है। कक्षा 1 में यह अपेक्षा है कि कक्षा में बच्चे की भाषा का उपयोग हो, जिससे उसे अवधारणाओं को अपने भाषायी ढाँचे के साथ जोड़ने का अवसर मिले।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक को तैयार करते समय शिक्षकों, शिक्षक–प्रशिक्षकों तथा शिक्षा क्षेत्र से सक्रिय रूप से जुड़े अनेक विद्वानों का सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। फिर भी सुधार करने और नया जोड़ने की संभावनाएँ तो हमेशा ही रहेंगी। इसलिए यह पुस्तक जिनके भी हाथ में है उनसे अनुरोध है कि इसे बच्चों के लिए और बेहतर बनाने के लिए अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव परिषद् को अवश्य भेजें।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

कक्षा पहली की पुस्तक को पढ़ाते समय आपने देखा होगा कि भाषा–शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को सिर्फ लिपि सिखाना नहीं है। आपने यह भी जाना होगा कि भाषा बच्चे के लिए बातचीत का माध्यम ही नहीं है वरन् उसके सोच को आगे बढ़ाने व पुख्ता बनाने का आधार भी है। भाषा के विविध उपयोगों से बच्चों की तर्क समझने व तर्क रचने की क्षमता तो बढ़ती है ही पर इसके साथ–साथ उनकी दृष्टि भी ज्यादा पैनी होती है। वह ज्यादा पहलुओं को ध्यान में रख सकते हैं और ज्यादा विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर सकते हैं। कक्षा–1 में प्रस्तुत सभी तरीकों को जारी रखें व बच्चों को आत्मविश्वास प्राप्त करने के अधिक–से–अधिक मौके दें।

कक्षा–2 में हिंदी भाषा सिखाने की प्रमुख आवश्यकताएँ, जिन पर ज़ोर दिया जाना है नीचे दी गई हैं–

- हिंदी में विविध कविताओं, कहानियों व विवरण को पढ़कर समझने की शुरुआत करना।
- कविता व कहानी को हाव–भाव अथवा उतार–चढ़ाव के साथ सुनाने का अभ्यास करना।
- नए शब्दों के संदर्भ से अर्थ सीखने का प्रयास।
- अपने आस–पास के जीवन को पाठ की सामग्री के साथ जोड़ना व उनमें तुलना करना।
- दिए गए निर्देश को समझना व धीरे–धीरे कुछ बड़े निर्देशों को समझकर उपयोग कर पाना।
- कविता, कहानी, नाटक आदि को बच्चे खुशी–खुशी पढ़ना चाहें व नई किताबों की तलाश करें। इसके लिए इस सामग्री को पढ़ने व समझने में निहित आनंद को वे महसूस करें।
- बच्चे हिंदी और अपनी बोली में चर्चा करें व एक भाषा में कही जाने वाली बात को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करें।
- बच्चों की, लिपि पढ़ने की क्षमता को आगे बढ़ाकर और वर्णों की पहचान के संदर्भ में उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना।
- पढ़ना सिखाने के प्रयास को जारी रखने के साथ–साथ कक्षा दो में लिखने को आगे बढ़ाना।

- यह अपेक्षा है कि बच्चे पाठ को पढ़कर नहीं तो कम–से–कम सुनकर अपने ढंग से समझने का प्रयास करेंगे। शिक्षक पाठ का विश्लेषण कर उसे पूरी तरह से समझा दें व बच्चे उसे याद कर लें यह भाषा सिखाने का उद्देश्य नहीं है।
- लिखने की क्षमता केवल अक्षर बनाने, शब्दों, वाक्यों अथवा वाक्यों की नकल करने तक नहीं है। यह तो सिर्फ लिख पाने की पहली सीढ़ी हो सकती है।
- अपने विचार, अपने मत, अपने उत्तर, अपने अनुभव बच्चे लिखें यह प्रयास शुरू होना है।
- स्वतंत्र रूप से ऐसे लिख पाने में स्वयं सोचकर चित्र बनाना भी साथ–साथ शुरू करने से मदद मिलेगी।
- लिख पाने के लिए अभिव्यक्ति की क्षमता, खुलापन व आत्मविश्वास तीनों ही बुनियादी जरूरतें हैं। इसके साथ ही कहीं पेंसिल पकड़ना, चलाना व अक्षर बना पाना भी शामिल हैं।

प्रत्येक पाठ में विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों का उल्लेख है। संबंधित शिक्षक अपने क्षेत्र विशेष की भाषा का सहयोग लें।

टीप–*प्रस्तुत पुस्तक प्रायोगिक संस्करण है। बच्चे को प्रथम भाषा हिन्दी सिखाने में उसकी मातृभाषा से सहायता लेने हेतु यह संस्करण एक सार्थक प्रयास है। सुधार की संभावनाएं अवश्य होंगी अतः आप पालकों, बालकों, शिक्षिकों व समुदाय के अभिमत/सुझावों का सदैव स्वागत है। कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत कराईए।*

Email: ***textbookscert@gmail.com***

विषय–सूची

	वर्णमाला	2 – 9
1.	तितली अउ डुँहरू	10 – 17
2.	पुतरी रानी के बिहाव	18 – 23
3.	कोन बोलिस माऊँ ?	24 – 31
4.	भलुवा हा खेलिस फुटबॉल	32 – 43
5.	चतुरा चीकू	44 – 49
6.	चाँटी अउ हाथी	50 – 59
7.	एका के बल	60 – 69
8.	कोन ?	70 – 75
9.	माटी	76 – 81
10.	गजब होइस	82 – 89
11.	मड़ई–मेला	90 – 97
12.	ऊँट चलय	98 – 105
13.	आईस एकठन खबर	106 – 113
14.	मुसवा ला मिलिस सीस	114 – 123
15.	धाम	124 – 127
16.	नान्हे–नान्हे डग	128 – 133
17.	चित्रकोट जलप्रपात	134 – 141
18.	का हे ओखर नाव ?	142 – 151
19.	साहसी बनव	152 – 157

विषय–सूची

	वर्णमाला	2 – 9
1.	तितली और कली	10 – 17
2.	गुड़िया रानी की शादी	18 – 23
3.	कौन बोला म्याऊँ	24 – 31
4.	भालू ने खेली फुटबाल	32 – 43
5.	चालाक चीकू	44 – 49
6.	चींटी और हाथी	50 – 59
7.	एकता का बल	60 – 69
8.	कौन ?	70 – 75
9.	मिट्टी	76 – 81
10.	बहुत हुआ	82 – 89
11.	मड़ई–मेला	90 – 97
12.	ऊँट चला	98 – 105
13.	आई एक खबर	106 – 113
14.	चूहे को मिली पेंसिल	114 – 123
15.	धूप	124 – 127
16.	छोटे–छोटे कदम	128 – 133
17.	चित्रकोट जलप्रपात	134 – 141
18.	क्या है उसका नाम ?	142 – 151
19.	साहसी बनो	152– 157
	यातायात सिग्नल	158

सीखने के प्रतिफल

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया

सभी शिक्षार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम बच्चों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए ताकि उन्हें :–

- अपनी भाषा में अपनी बात कहने, बातचीत करने की भरपूर आज़ादी और अवसर हों।
- हिंदी में सुनी गई बात, कविता, कहानी आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में कहने–सुनाने/प्रश्न पूछने एवं अपनी बात जोड़ने के अवसर उपलब्ध हों।
- बच्चों द्वारा अपनी भाषा में कही गई बातों को हिंदी भाषा और अन्य भाषाओं (जो भाषाएँ कक्षा में मौजूद हैं या जिन भाषाओं के बच्चे कक्षा में हैं) में दोहराने के अवसर उपलब्ध हों। इससे भाषाओं को कक्षा में समुचित स्थान मिल सकेगा और उनका शब्द–भंडार, अभिव्यक्तियों का भी विकास करने के अवसर मिल सकेंगे।
- 'पढ़ने का कोना' में स्तरानुसार विभिन्न प्रकार की और विभिन्न भाषाओं (बच्चों की अपनी भाषा/एँ, हिंदी आदि) में रोचक सामग्री; जैसे – बाल साहित्य, बाल पत्रिकाएँ, पोस्टर, ऑडियो–विडियो सामग्री उपलब्ध हों।
- चित्रों के आधार पर अनुमान लगाकर कर तरह–तरह की कहानियों, कविताओं को पढ़ने के अवसर उपलब्ध हों।

सीखने की संप्राप्ति (Learning Outcomes)

बच्चे –

LH201. विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा/और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे– जानकारी पाने के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना, अपना तर्क देना आदि।

LH202. कही जा रही बात, कहानी, कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताते/ सुनाते हैं।

LH203. देखी, सुनी बातों, कहानी, कविता आदि के बारे में बातचीत करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

LH204. अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनायी जा रही सामग्री; जैसे – कविता, कहानी, पोस्टर, विज्ञापन आदि से जोड़ते हुए बातचीत में शामिल करते हैं।

LH205. भाषा में निहित शब्दों और ध्वनियों के साथ खेल का मज़ा लेते हुए लय और तुक वाले शब्द बनाते हैं; जैसे – एक था पहाड़, उसका भाई था दहाड़, दोनों गए खेलने . .....।

LH206. अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि कहते/सुनाते हैं/आगे बढ़ाते हैं।

LH207. अपने स्तर और पसन्द के अनुसार कहानी, कविता, चित्र पोस्टर आदि आनंद के साथ पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं/प्रश्न पूछते हैं।

LH208. चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं पर बारीक अवलोकन करते हैं।

LH209. चित्र में या क्रमवार सजाए चित्रों में घट रहीं अलग–अलग घटनाओं, गतिविधियों

- विभिन्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने के विभिन्न आयामों को कक्षा में उचित स्थान देने के अवसर उपलब्ध हों, जैसे – किसी कहानी में किसी जानकारी को खोजना, कहानी में घटी विभिन्न घटनाओं के क्रम को तय करना, किसी घटना के होने के लिए तर्क दे पाना, पात्र के संबंध में अपनी पसंद या नापसंद के बारे में बता पाना आदि।
- कहानी, कविता आदि को बोलकर, पढ़कर सुनाने के अवसर हों और उस पर बातचीत करने के अवसर हों।
- सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से कागज़ पर उतारने के अवसर हों। ये चित्र भी हो सकते हैं, शब्द भी और वाक्य भी।
- बच्चे अक्षरों की आकृति को बनाने में अपेक्षाकृत सुघड़ता का प्रदर्शन करते हैं। इसे कक्षा में प्रोत्साहित किया जाए।
- बच्चों द्वारा अपनी वर्तनी गढ़ने की प्रवृत्ति को भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा समझा जाए।
- संदर्भ और उद्देश्य के अनुसार उपयुक्त शब्दों और वाक्यों का चयन करने, उनकी संरचना करने के अवसर उपलब्ध हों।

और पात्रों को एक संदर्भ या कहानी के सूत्र में देखकर समझते हैं और सराहना करते हैं।

LH210. परिचित/अपरिचित लिखित सामग्री में रूचि दिखाते हैं और अर्थ की खोज में विविध प्रकार की युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं; जैसे – चित्रों और प्रिंट की मदद से अनुमान लगाना, अक्षर–ध्वनि संबंध का इस्तेमाल करना, शब्दों को पहचानना, पूर्व अनुभवों और जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।

LH211. प्रिंट (लिखा या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य की इकाइयों की अवधारणा को समझते हैं, जैसे – 'मेरा नाम विमला है।' बताओ, इस वाक्य में कितने शब्द हैं? 'नाम' शब्द में कितने अक्षर हैं या 'नाम' शब्द में कौन–कौन से अक्षर हैं?

LH212. हिंदी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

LH213. स्कूल के बाहर और स्कूल के भीतर (पुस्तक कोना/पुस्तकालय से) अपनी पसंद की किताबों को स्वयं चुनकर पढ़ने का प्रयास करते हैं।

LH214. स्वेच्छा से या शिक्षक द्वारा तय गतिविधि के अंतर्गत चित्रों, आड़ी–तिरछी रेखाओं (कीरम–काटे), अक्षर आकृतियों से आगे बढ़ते हुए स्व–वर्तनी का उपयोग और स्व–नियत्रित लेखन (कनवैंनशनल राइटिंग) करते हैं।

LH215. सुनी हुई और अपने मन की बातों को अपने तरीके से और तरह–तरह से चित्रों/शब्दों/वाक्यों द्वारा (लिखित रूप से) अभिव्यक्त करते हैं।

LH216. अपनी निजी ज़िंदगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को अपने लेखन में शामिल करते हैं।

LH217. अपनी कल्पना से कहानी, कविता आदि आगे बढ़ाते हैं।

विषय–सूची (Contents)

अध्याय	पाठ का नाम	सीखने के प्रतिफल
	वर्णमाला	LH211, LH212
1.	तितली और कली	LH201, LH202, LH203, LH204, LH205, LH210, LH211, LH212, LH213, LH215, LH216
2.	गुड़िया रानी की शादी	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH207, LH208, LH209, LH211, LH212, LH214, LH215, LH216, LH217
3.	कौन बोला म्याऊँ	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH207, LH208, LH209, LH211, LH212, LH214, LH215, LH216, LH217
4.	भालू ने खेली फुटबाल	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH207, LH208, LH209, LH211, LH212, LH214, LH215, LH216, LH217
5.	चालाक चीकू	LH201, LH202, LH203, LH204, LH205, LH210, LH211, LH212, LH213, LH215, LH216
6.	चींटी और हाथी	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH209, LH214, LH215, LH216, LH217
7.	एकता का बल	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH209, LH214, LH215, LH216, LH217
8.	कौन?	LH202, LH203, LH204, LH206, LH211, LH215, LH216, LH217
9.	मिट्टी	LH201, LH202, LH203, LH204, LH205, LH206, LH207, LH208, LH209, LH210, LH213, LH215, LH216
10.	बहुत हुआ	LH202, LH203, LH204, LH208, LH209, LH212, LH213, LH216, LH217
11.	मड़ई–मेला	LH202, LH204, LH206, LH215, LH216, LH217
12.	ऊँट चला	LH201, LH202, LH203, LH204, LH211, LH212,LH215, LH216, LH217
13.	आई एक खबर	LH201, LH202, LH203, LH205, LH207, LH208, LH209, LH212, LH213, LH216, LH217
14.	चूहे को मिली पेंसिल	LH201, LH202, LH203, LH204, LH205, LH210, LH211, LH212, LH213, LH215, LH216
15.	धूप	LH202, LH203, LH204, LH206, LH215, LH216, LH217
16.	छोटे–छोटे कदम	LH202, LH203, LH204, LH206, LH211, LH215, LH216, LH217
17.	चित्रकोट जलप्रपात	LH202, LH203, LH204, LH206, LH215, LH216, LH217
18.	क्या है उसका नाम?	LH201, LH202, LH204, LH207, LH210, LH211, LH212, LH215, LH216, LH217
19.	साहसी बनो	LH201, LH202, LH203, LH204, LH206, LH206, LH215, LH216

उदाहराणार्थ रूब्रिक्स

Chapter अध्याय	Sub-Topics उप-विषय	Level -1 स्तर-1	Level -2 स्तर-2	Level -3 स्तर-3	Level -4 स्तर-4
After the lesson, students will be able to : पाठ के बाद, विद्यार्थी कर सकेंगे :		**Remember, Recall, List, Locate, Label, Recite** **याद करना, स्मरण करना, सूचीबद्ध करना, खोजना लेबल करना, वर्णन करना**	**Understand, explain, Illustrate, summaries, match** **समझना, व्याख्या करना, संक्षेप में लिखना, उदाहरण देना, मेल करना**	**apply, organize, use, solve, prove, draw** **प्रयोग करना, व्यवस्थित करना, उपयोग करना, हल करना, साबित करना, चित्रण करना**	**evaluate, hypothesis, analyses, compare, create, categories** **मूल्यांकन करना, परिकल्पना करना, विश्लेषण करना, तुलना करना, सृजन करना, वर्गीकरण करना**
1	2	3	4	5	6
तितली और कली	• कविता हाव–भाव व लयबद्ध तरीके से सुना सकेगें। • नये कठिन शब्द सीख सकेगें। • नये शब्दार्थ सीख सकेंगे। • कविता का भावार्थ समझ सकेंगे। • प्रकृति से जुड़ाव महसूस कर सकेंगे।	• कविता लयबद्ध तरीके से सुनाते हैं। • नये शब्द पढ़ पाते हैं। • शब्दार्थ बता पाते हैं। • नये कठिन शब्द पढ़ व लिख सकते हैं।	• मिलते–जुलते शब्द ढूँढकर लिख सकते हैं। • तितली के आकार रंग–रूप पर समझ के साथ बताते हैं। • फूलों के बारे में बताते हैं। • महक से संबंधित पंसद–नापंसद चीजों के नाम लिखते हैं।	• रंग–बिरंगी गतिविधि करके रंगों के नाम बताते हैं। • कठिन शब्दों का प्रयोग कर पाते हैं।	• तितली–भौंरा फूलों के बारे में अपने शब्दों में बता पाते हैं।

वर्णमाला

हिंदी वर्णमाला मा कुल 52 अक्षर होथे।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	श्र				

वर्णमाला

हिंदी वर्णमाला में कुल 52 अक्षर हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण		
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह			
क्ष	त्र	ज्ञ				
ड़	ढ़	श्र				

संयुक्त अक्षर

त्र	ज्ञ	क्ष	श्र
(त्+र)	(ज्+ञ)	(क् +ष)	(श् +र)

ऐकर अलावा ऐसन भी अउ संयुक्त अक्षर बनथे।

क् + य = क्य

च् + च = च्च

त् + त = त्त

च् + छ = च्छ

ग् + य = ग्य

स् + थ = स्थ

प् + य = प्य

ड् + ड = ड्ड

संयुक्त अक्षर

त्र	ज्ञ	क्ष	श्र
(त्+र)	(ज्+ञ)	(क् +ष)	(श् +र)

इनके अतिरिक्त इस प्रकार से भी संयुक्त अक्षर बनते हैं–

क् + य = क्य

च् + च = च्च

त् + त = त्त

च् + छ = च्छ

ग् + य = ग्य

स् + थ = स्थ

प् + य = प्य

ड् + ड = ड्ड

संयुक्त अक्षरों वाले सब्द

पान	मया	पियास
कृष्ण	पिरथी	का
पप्पू	गोंदली	चप्पू
निक	भाग	लइका
इस्कूल	पुस्तक	मंगसा
लाड़ू	संझा	आनन्द
न्यारी	प्यारी	क्यारी
स्वास्थ्य	ग्वाला	सिलेट–पट्टी

संयुक्त अक्षरों वाले शब्द

पत्ता	प्यार	प्यास
कृष्ण	पृथ्वी	क्या
पप्पू	प्याज	चप्पू
अच्छा	भाग्य	बच्चा
स्कूल	पुस्तक	मच्छर
लड्डू	संध्या	आनन्द
न्यारी	प्यारी	क्यारी
स्वास्थ्य	ग्वाल	स्लेट

ब+न्+द+र = बन्दर (बेंदरा)

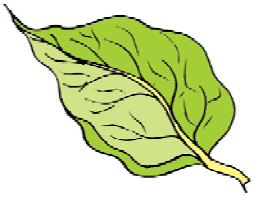

प+त्+त+ा = पत्ता (पान)

ि+ब+ल्+ल+ी = बिल्ली (बिलई)

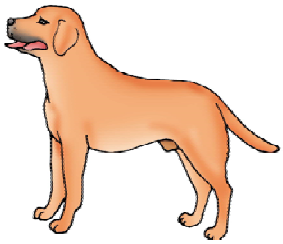

क+ ु+त्+त+ा = कुत्ता (कुकुर)

ग+ ु+ड्+ड+ी = गुड्डी (गुड्डी)

ब+च्+च+ा = बच्चा (लइका)

ब+न्+द+र = बन्दर

प+त्+त+ा = पत्ता

ि+ब+ल्+ल+ ी = बिल्ली

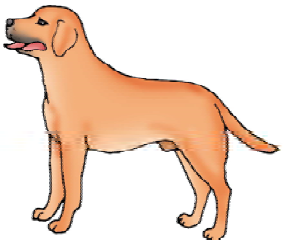

क+ु+त्+त+ा = कुत्ता

ग+ु+ड्+ड+ ी = गुड्डी

ब+च्+च+ा = बच्चा

पाठ 1

तितली अउ डुँहरू

छटक के, ममहान/सुगंध,रंग मा रंगे, सुग्घर

नान्हे सुग्घर एक डुँहरू,
हरियर डार मा लगे रहिस,
तैं हा लागथस अब्बड़ निक,
तितली ओला आके बोलिस।

अब जागव आँखी खोलव,
अउ संग मा हमर खेलव।
बगरत हे सुग्घर महक तोर ,
ममहाय जम्मो गली खोर।
डुँहरू चटक के फूलिस रंग मा।

तुरते खेल के सुन के बात।
संग हवा के दउड़े लागिस,
तितली हा छुए बर साथ।

शिक्षण संकेत – कविता को गाकर सुनाएँ फिर दुहराने को कहें। आसपास में पाए जाने कीट – पतंगों के बारे में बच्चों से प्रश्न पूछें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ क्षेत्रीय भाषा/बोली में बताएँ।

पाठ 1

तितली और कली

2SCE27

छिटककर, महक, रंगीली, सुंदर

हरी डाल पर लगी हुई थी,
नन्ही सुंदर एक कली।
तितली उससे आकर बोली,
तुम लगती हो बड़ी भली।

अब जागो तुम आँखें खोलो,
और हमारे संग खेलो।
फैले सुंदर महक तुम्हारी,
महके सारी गली गली।
कली छिटककर खिली रंगीली,
तुरंत खेल की सुनकर बात।
साथ हवा के लगी भागने,
तितली छूने उसे चली।

शिक्षण संकेत – कविता को गाकर सुनाएँ फिर दुहराने को कहें। आसपास में पाए जाने कीट – पतंगों के बारे में बच्चों से प्रश्न पूछें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ क्षेत्रीय भाषा/बोली में बताएँ।

कविता ले

- तितली डुँहरू के तिर काबर गे रहिस ?
- तितली अउ डुँहरू हा का खेल खेलिन ?
- तितली के का कहे मा डुँहरू खुस होगे ?

अटकर लगावव

- तितली डुँहरू के तिर मा कतका बेर गीस होही ?

बिहनिया ☐ **मंझनिया** ☐ **संझा** ☐

- तैं हा समे के अटकर कइसे लगाए?

मिलत–जुलत सब्द

- कविता मा अइसन सब्द खोजव जेला सुने मा 'रहिस' असन लगे।
  जइसे – रहिस, लागिस.....
- खाल्हे म दे सब्द जइसे कुछु सब्द अपन मन ले जोड़व –

.....बोल.....	.....तितली.....	.....डाल .....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

महमहाय सब्बो गली खोर

- महक तुमन ला बने तको लग सकत हे अऊ गिनहा घलो।
  बने लगे वाले महक ला कहिहू .....
  गिनहा लगे वाले महक ला कहिहू .....
- अइसन जिनिस मन के नाव लिखव जेखर ममहाना तुमन ला बने लगथे अऊ बने नइ लागय।

कविता से

- तितली कली के पास क्यों गई थी?
- तितली और कली ने क्या खेल खेला?
- तितली के क्या कहने पर कली खुश हो गई?

अंदाज़ा लगाओ

- तितली कली के पास कब गई होगी?

सुबह ☐ **दोपहर** ☐ **शाम** ☐

- तुमने समय का अंदाज़ा कैसे लगाया?

मिलते–जुलते शब्द

- कविता में से वे शब्द ढूँढ़ो जो सुनने में कली जैसे लगते हैं।

  जैसे – कली, भली

- नीचे दिए गए शब्दों जैसे कुछ शब्द अपने मन से जोड़ो।

.....बोलो.....	.....तितली.....	.....डाल .....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

महके सारी गली–गली

- महक तुम्हें अच्छी भी लग सकती है और बुरी भी।

  अच्छी लगने वाली महक को कहेंगे .....

  बुरी लगने वाली महक को कहेंगे .....

- ऐसी चीज़ों के नाम लिखो जिनकी महक तुम्हें पसंद है और जिनकी पसंद नहीं है।

बने लगथे	बने नइ लगय
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

- तुँहर तिर–तखार मा अइसन कोन–कोन फूल हे जेखर महक बहुँत जादा हे ?

  फूल मन के नाँव अपन भाखा मा लिखव।

- तुँहर घर मा कइसन–कइसन महक आथे ?

  (जइसे साबुन, तेल के महमहाना नहानी खोली ले)

तुँहर गोठ

खेले बर डुँहरू तुरते जाग गे रहिस। तुमन हा कोन काम बर तुरते जाग जाहू? अउ कोन काम बर जागे के मन नइ करहू अउ का बर ?

जागहू	नई जागव
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

पसंद है	पसंद नहीं है
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

- तुम्हारे आसपास ऐसे कौन–कौन से फूल हैं जिनकी बहुत तेज़ महक है?

  फूलों के नाम अपनी भाषा में लिखो।
- तुम्हारे घर में किस–किस तरह की महक आती है?

  (जैसे – साबुन या तेल की महक गुसलखाने से)

तुम्हारी बात

खेलने के लिए कली तुरंत जाग गई थी। तुम किस काम के लिए तुरंत जाग जाओगे और किस काम के लिए जागना पसंद नहीं करोगे? क्यों?

जागेंगे	नहीं जागेंगे
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

रंग–बिरंगी

हरियर डार मा लगे रहिस हे
नान्हे सुग्घर एक डुँहरू

कविता मा बिरवा के डार हरियर रंग के बताए गे हे।
खाल्हे लिखाय जिनिस मन कोन–कोन रंग के हो सकथे ?

..... तितली ..... सुरुजमुखी
..... भाटा ..... लाडू
..... सीस ..... कटोरी
..... कुरथा ..... साग
..... संतरा ..... माटी

रंग–बिरंगी

हरी डाल पर लगी हुई थी
नन्ही सुंदर एक कली

कविता में पौधे की डाल हरे रंग की बताई गई है।
नीचे लिखी चीज़ें किन–किन रंगों की हो सकती हैं ?

..... तितली ..... सूरजमुखी
..... बैंगन ..... लड्डू

..... पेंसिल ..... प्याला
..... कुर्ता ..... साग
..... संतरा ..... मिट्टी

2SLA3U

पाठ 2

i(r jh jkuh d: fcgko

गहिर, मितानी, सुन्ता करना, मदद, माला, बधाई गाना, जुट जाना

चंपा अउ मंजू दू झन रहिन। दूनों मा गजब मितानी रहिस। चंपा मेर रहिस। मंजु मेर रहिस। दूनों रोज साँझ के बेरा मा खेलयँ। उँखर घलो तिरे–तिर मा रहिस। मा घलो ओमन एक संग पढ़यँ।

एक दिन दूनो तय करिन कि ओमन अउ के बिहाव करहीं। दूसर दिन ले ओमन बिहाव के तियारी मा लग गिन। दूनों झन अपन–अपन दाई ले मदद माँगिन। एती चंपा के दाई हा के लहँगा अउ ओढ़नी बनाईस। ओती मंजू के दाई हा के कुरथा अउ तियार करिस। सब्बो संगवारी मन ला बिहाव के नेवता भेजिन। बिहाव के दिन सूरूज के दाई हा फूल के दू ठन बना दिस। भइया मिठई के दुकान ले अउ ले आइन। ओमन पंडित ला घलो बुलाईन। रामू कका हा बजाईस अउ हा बधई गीत गाईन। अइसन अउ के बिहाव होइस।

पाठ 2

xfM;k jkuh dh 'kknh

2SV65H

गहरी, मित्रता, तय करना, मदद, माला, बधाई गाना, जुट जाना

चंपा और मंजु दो थीं। दोनों में गहरी मित्रता थी। चंपा के पास थी। मंजु के पास था। दोनों रोज शाम को में खेलती थीं। उनके भी पास–पास थे। में भी वे एक साथ पढ़ती थीं।

एक दिन दोनों ने तय किया कि वे और की शादी करेंगी। अगले दिन से ही वे शादी की तैयारी में जुट गईं। दोनों ने अपनी–अपनी माँ से मदद माँगी। इधर चंपा की माँ ने का लहंगा और दुपट्टा बनाया। उधर मंजु की माँ ने का कुर्ता और तैयार की। सब मित्रों को शादी का निमंत्रण कार्ड भेजा गया। शादी के दिन सूरज की माँ ने फूलों की दो बना दीं। भैया मिठाई की दुकान से और ले आए। उन्होंने पंडित को भी बुलवाया। रामू काका ने बजाया और ने बधाई गाई। इस तरह और की शादी हुई।

शिक्षण संकेत :–

1.पाठ पढ़ने का अभ्यास पूर्व से ही कर लें।
2.पाठ का आदर्श वाचन करते समय प्रश्नोत्तर तकनीक का उपयोग करें।
3.बारी–बारी से सभी बच्चों से वाचन करवाएँ।

शब्दार्थ

गहरी = गहिर, गहिरी। मितानी = दोस्ती।
मदद = सहायता। माला = हार।
बधाई गाना = बिहाव के गीत गाना। जुट जाना = काम मा लग जाना

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय सब्द के मायने अपन भाखा मा बतावव–

दोस्ती , माला , मदद , बधाई गाना

2. सही का हे –

1.चंपा मेर ..... (पुतरी रहिस/पुतरा रहिस)
2.चंपा अउ मंजु के घर .....(तिर मा रहिस/दुरिहा मा रहिस।
3.पुतरी अउ पुतरा के बिहाव बर ओमन हा ..... ले मदद मांगिन। (दाई ले/बाबू ले)
4.मंजू के दाई हा.....कुरथा बनाईस। (पुतरी के/पुतरा के)
5.सूरज के दाई हा .....(मिठई बनाईस/माला बनाईस)
6.रामू कका हा .....(ढोलक/मांदर बजाईस/बधाई गाईस)

3. अपन संगवारी के नाव बतावव।

4. तुमन अपन गाँव घर मा बिहाव देखे होहू। बिहाव मा का–का होथे, ओखर बारे मा बतावव।

शिक्षण संकेत :–

1.पाठ पढ़ने का अभ्यास पूर्व से ही कर लें।
2.पाठ का आदर्श वाचन करते समय प्रश्नोत्तर तकनीक का उपयोग करें।
3.बारी–बारी से सभी बच्चों से वाचन करवाएँ।

शब्दार्थ

गहरी	= अच्छी, गाढ़ी।	मित्रता	= दोस्ती।
तय करना	= निश्चित करना।	जुट जाना	= किसी काम में लगना।
मदद	= सहायता।	माला	= हार।
बधाई गाना	= शादी के गीत गाना।		

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

मित्रता, माला, मदद, तय करना, बधाई गाना

2. सही क्या है –

1. चंपा के पास ..... (गुड़िया थी/गुड्डा था।)
2. चंपा और मंजू के घर ..... । (पास–पास थे/दूर–दूर थे।)
3. गुड्डा व गुड़िया की शादी के लिए उन्होंने ..... सहायता माँगी, (माँ से/पिता से)
4. मंजू की माँ ने ..... कपड़े बनाए। (गुड्डे के/गुड़िया के)
5. सूरज की माँ ने ..... (मिठाई बनाई/मालाएँ बनाईं)
6. रामू काका ने .....(ढोलक बजाया/बधाई गाई)

3. अपनी सहेलियों/मित्रों के नाम लिखो –

4. तुमने अपने गाँव/घर में शादियाँ देखी होंगी। शादियों में क्या – क्या होता है, उसके बारे में बताओ।

5. का तुमन हा अक्ती (अक्षय तृतीया) तिहार के बारे मा सुने हवव। ये तिहार कइसे मनाय जाथे, पता लगावव।

6. फोटू ला देख के नाँव लिखव –

_ _ _ _ _ _ _ _ _

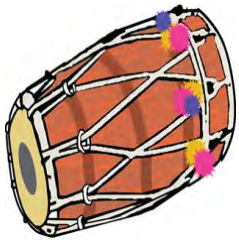

_ _ _ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _ _ _

_ _ _ _ _ _ _ _ _

7. अपन घर मा जुन्ना फरिया ले पुतरी अउ पुतरा बनावव।

8. टिपका मन ला जोड़ के फोटू ला पूरा करव अउ रंग भरव।

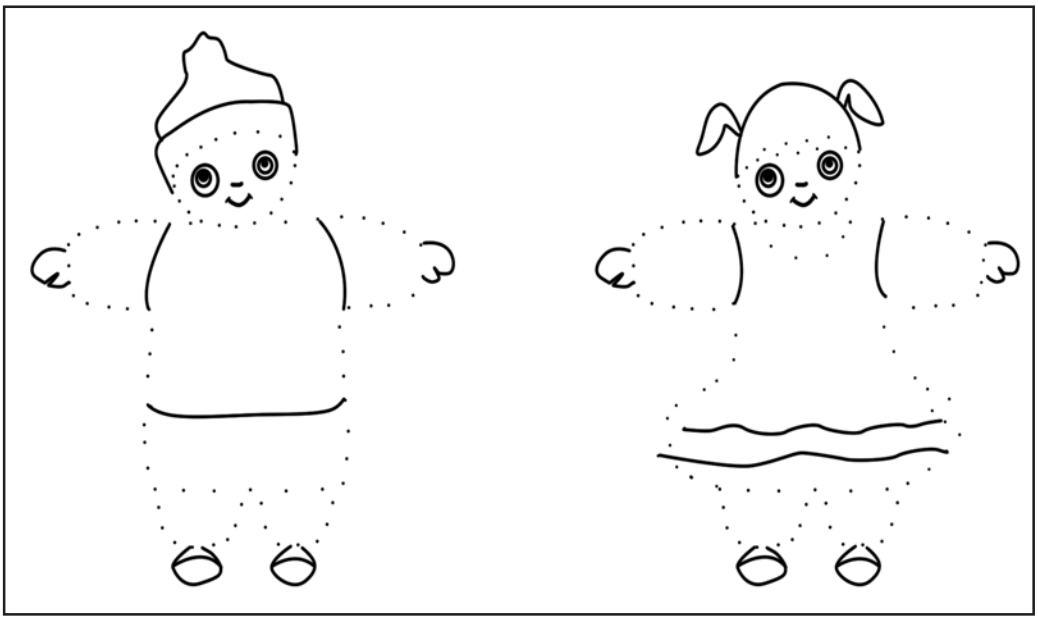

5. क्या तुमने अक्ती (अक्षय तृतिया) त्यौहार के बारे में सुना है। यह त्यौहार कैसे मनाया जाता है, पता करो।

6. चित्र देखकर नाम लिखो–

— — — — — — — —

— — — — — — — — —

— — — — — — — — —

— — — — — — — — —

2T5275

7. अपने घर में पुराने कपड़ों से गुड़िया और गुड्डा बनाओ।

8. बिंदुओं को मिलाकर चित्र पूरा करो और रंग भरो।

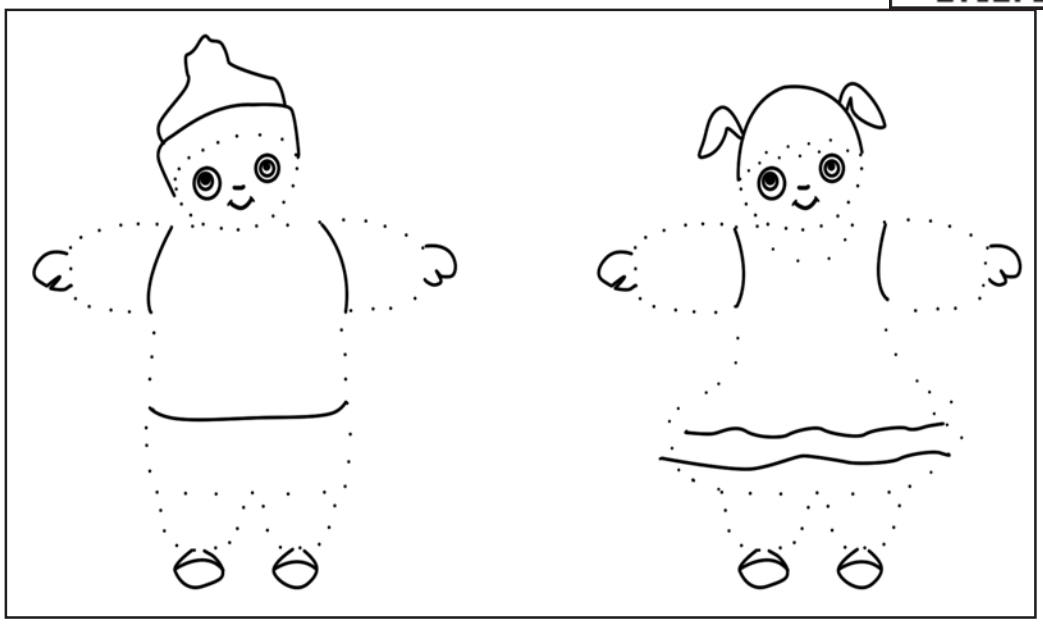

पाठ 3

dku ckfy l ekÅ; \

पिला	माऊँ	आवाज / आरो
मेचका	फुदक	भिन्–भिन्
मंदरस माछी	झाड़ी	टर्र–टर्र

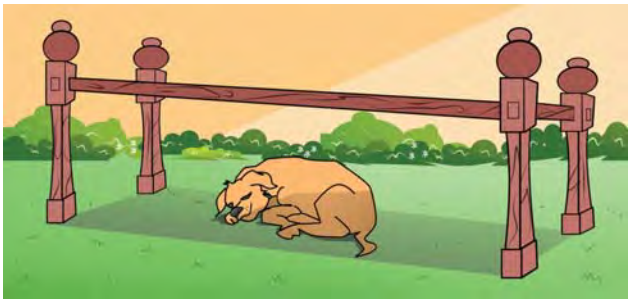

एक ठन पिला खटिया के खाल्हे सुते रहिस। तभे अवाज सुनाईस ....माँऊ! पिला झटकुन उठ के बइठगे। ऐती–ओती देखिस, अवाज कहाँ ले

आईस ? कहूँ कोनो नइ रहिस। ओ हा घर ले बाहिर आइस। तभे तिर के झुरमुट मेर ले एकठन मुसवा कूद के आघू मा आगे।

पिला हा पूछिस – ''का तैं बोलेस माऊँ?'' नइ मैं त चीं–चीं करथौं ''–मुसवा कहिस। पिला फूल के बिरवा मेर पहुँचिस। फूल मा एकठन मंदरसमाछी बइठे रहिस। पिला हा पूछिस –''का तैं बोलेस माऊँ?'' ''नइ मैं त भिन्–भिन् करथौं। ''फेर अवाज आइस ''माऊँ''।

तरिया के तिर मा एकठन मेचका बइठे रहिस पिला हा मेचका ला पूछिस – '' का तैं बोलेस माऊँ? '' मैं तो टर्र–टर्र बोलथौं। '' फेर अवाज आइस '' माऊँ '' कोन बोलिस माऊँ ?

मैं बोलेंव माऊँ ...

पाठ 3

dku ckyk E;kÅ¡ \

पिल्ला	म्याऊँ	आवाज
मेंढक	फुदक	भिन्–भिन्
मधुमक्खी	झाड़ी	टर्र–टर्र

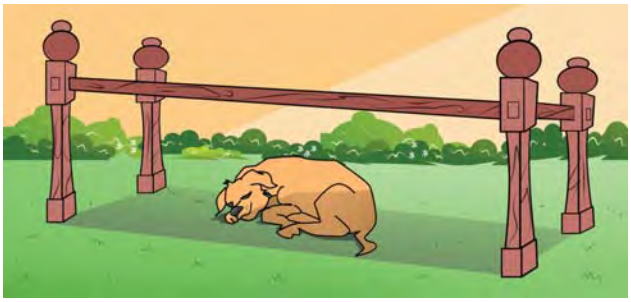

एक पिल्ला खाट के नीचे सो रहा था। तभी आवाज सुनाई दी .... म्याऊँ! पिल्ला झट उठ बैठा। इधर–उधर देखा आवाज कहाँ से आई ? कहीं कोई

नहीं था। वह घर से बाहर आया। तभी पास की झाड़ी में से एक चूहा कूदकर सामने आया।

पिल्ले ने पूछा– "क्या तुम बोले म्याऊँ ?"
''नहीं, मैं तो 'चीं–चीं' बोलता हूँ''– चूहा बोला।
पिल्ला फूल के पौधे के पास पहुँचा। फूल पर एक मधुमक्खी बैठी थी। पिल्ले ने पूछा–''क्या तुम बोली म्याऊँ ?'' ''नहीं, मैं तो भिन्–भिन् करती हूँ।''

फिर आवाज आई ''म्याऊँ।''
तालाब के किनारे एक मेंढक बैठा था।
पिल्ले ने मेंढक से पूछा– ''क्या तुम बोले म्याऊँ ?''
''मैं तो टर्र–टर्र बोलता हूँ।'' फिर आवाज आई, "म्याऊँ।"
''कौन बोला म्याऊँ ?''

मैं बोली म्याऊँ...

शिक्षण संकेत – पाठ आरंभ करने के पूर्व कुछ पालतू जानवरों की आवाज के संबंध में बच्चों से चर्चा करें। उसे बच्चों से निकालने को भी कहें तत्पश्चात पाठ आरंभ करें। पाठ के अंत में कुछ प्रश्न भी पूछें और उनको उत्तर देने हेतु प्रेरित करें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

पिल्ला = कुकुर के लइका, आवाज = आरो (ध्वनि),भिन्–भिन् = मंदरसमाछी के आवाज

अभ्यास

1. खाल्हे मा दे सब्द के माने अपन भाखा मा बतावव –

पिल्ला, मेंढक, मधुमक्खी, झाड़ी

2. कोन–कइसे बोलथे, जोड़ी बनावव –

1. 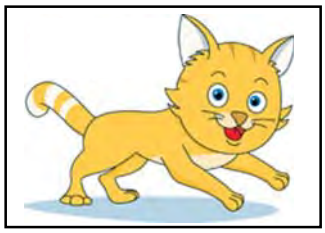 – भिन् – भिन्

2. – टर्र – टर्र

3. – भौं – भौं

4. – म्याऊँ–म्याऊँ

शिक्षण संकेत – पाठ आरंभ करने के पूर्व कुछ पालतू जानवरों की आवाज के संबंध में बच्चों से चर्चा करें। उसे बच्चों से निकालने को भी कहें तत्पश्चात पाठ आरंभ करें। पाठ के अंत में कुछ प्रश्न भी पूछें और उनको उत्तर देने हेतु प्रेरित करें। अभ्यासमाला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

पिल्ला = कुत्ते का बच्चा, आवाज = ध्वनि, भिन्–भिन् = मधुमक्खी की आवाज

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

पिल्ला, मेंढक, मधुमक्खी, झाड़ी

2. कौन कैसे आवाज निकालता है जोड़ी बनाओ –

1. 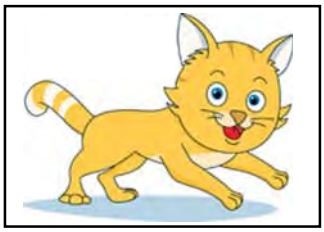 – भिन् – भिन्

2. – टर्र – टर्र

3. – भौं – भौं

4. – म्याऊँ–म्याऊँ

3. सही उत्तर मा ✓ के चिन्हा लगावव –

क. पिला कहाँ सुते रहिस ?
(खटिया खाल्हे / खटिया ऊपर)

ख. फूल मा कोन बइठे रहिस ?
(मंदरसमाछी / कीरा)

ग. तरिया मा कोन बइठे रहिस ?
(मेचका / मुसवा)

घ. माऊँ कोन बोलिस ?
(बिलई / पिला)

4. लकीर खींच के सही जोड़ी बनावव –

क		ख
चिंया	–	कुकुर
पिला	–	कुकरी
बछरू	–	भेड़ी
छौना	–	गाय
मेमना	–	हिरना

5. सोच के बतावव ।

तुमन अपन तिर–तखार मा बहुत अकन आरो सुनत होहू। बतावव ये आरो काखर हरे ?

1. घर्र – घर्र –
2. टन – टन –
3. ट्रिंग – ट्रिंग –
4. झुन – झुन –
5. ठन – ठन –

6. एक जइसे अवाज वाले सब्द मन के उच्चारण करव।

क. साड़ी – गाड़ी

ख. टर्र–टर्र – फर्र–फर्र

3. सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाओ।

क. पिल्ला कहाँ सोया था ?
(खाट के नीचे / खाट के ऊपर)

ख. फूल पर कौन बैठा था ?
(मधुमक्खी / कीड़ा)

ग. तालाब के किनारे कौन बैठा था ?
(मेंढक / चूहा)

घ. म्याऊँ कौन बोला ? बताओ।
(बिल्ली / पिल्ला)

4. कौन, किसका बच्चा है? रेखा खींचकर सही जोड़ी बनाओ।

क		ख
चूजा	–	कुत्ता
पिल्ला	–	मुर्गी
बछड़ा	–	भेड़
छौना	–	गाय
मेमना	–	हिरन

5. सोचकर बताओ।

तुम अपने आस – पास बहुत सी आवाजों को सुनते होगे। बताओं ये आवाजें किसकी हैं?

1. घर्र – घर्र –
2. टन – टन –
3. ट्रिंग – ट्रिंग –
4. झुन – झुन –
5. ठन – ठन –

6. एक जैसी ध्वनि वाले शब्दो का उच्चारण करो।

क. साड़ी – गाड़ी

ख. टर्र–टर्र – फर्र–फर्र

ग. आस – पास

घ. झट – पट

6. कोन – कहाँ मिलही –

जघा 1	जघा 2	जीव – जंतु
....	....	साँप
....	....	सुवा
....	....	हाथी
....	....	गाय

7. गतिविधि –

1. खाल्हे मा बने वर्ग मा सोलह जानवर अउ जन्तु मन के नाँव लुकाए हे, खोजके पढ़व –

हा	थी	गि	घो	ड़ा	म
गा	ऊँ	ल	में	ढ	क
य	ट	ह	लो	म	ड़ी
ब	क	री	ना	ग	धा
त	शे	र	हि	र	न
ख	र	गो	श	भा	लू

2. फोटू ला पूरा करव अउ रंग भर के ओखर नाव लिखव –

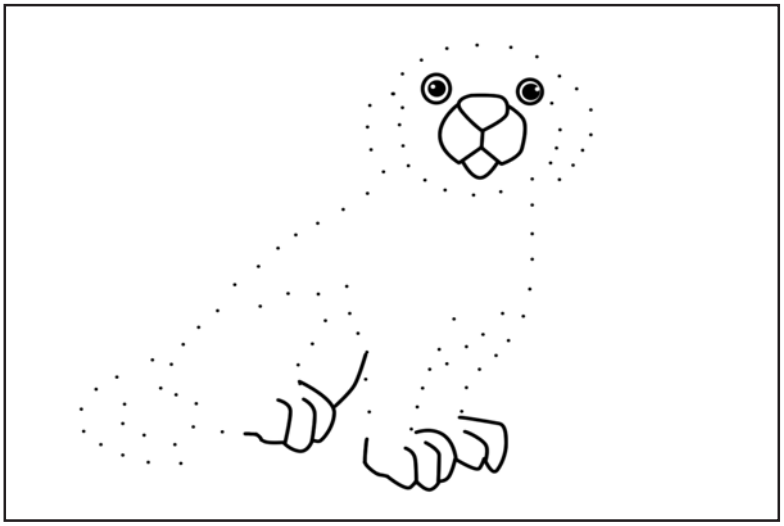

2THTAF

ग. आस – पास

घ. झट – पट

6. कौन – कहाँ मिलेगा

स्थान 1	स्थान 2	जीव – जंतु
.....	.....	साँप
.....	.....	तोता
.....	.....	हाथी
.....	.....	गाय

7. गतिविधि –

1. नीचे बने वर्ग में सोलह पशुओं एवं जंतुओं के नाम छिपे हैं, ढूँढ़कर पढ़ो।

हा	थी	गि	घो	ड़ा	म
गा	ऊँ	ल	में	ढ	क
य	ट	ह	लो	म	ड़ी
ब	क	री	ना	ग	धा
त	शे	र	हि	र	न
ख	र	गो	श	भा	लू

2. चित्र पूरा करो एवं रंग भरकर उसका नाम लिखो –

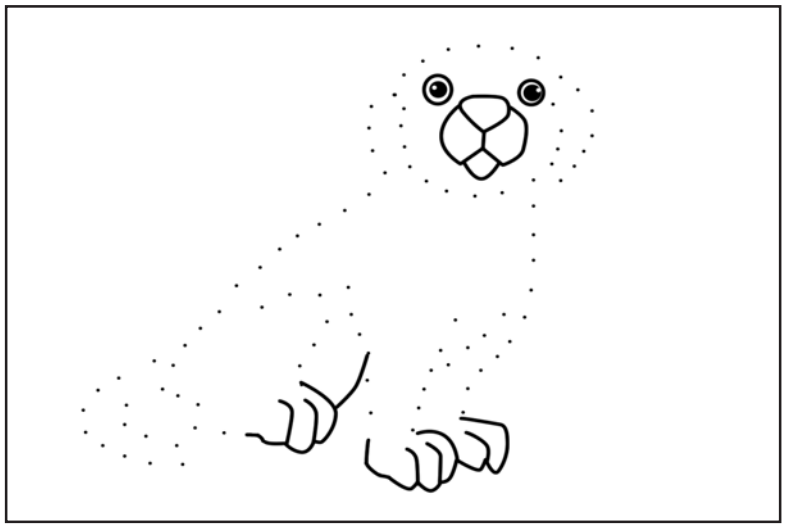

पाठ 4

Hkyok gk [kfyl QVcky

गर्मी , नजर , आँखी, लकर धकर

जाड़ के महिना रहिस। बिहनिया के बेरा। चारों कोती कुहरेच–कुहरा। एक ठन बघवा के पिला हा गुटू–मुटू हो के चिरई जाम के रूख खाल्हे सुते रहिस।

एती भलुवा साहेब घुमे ला निकल तो गे रहिस, फेर पछतात रहिस। तभे ओखर नजर चिरई जाम के रूख के खाल्हे मा परिस।

आँखी बटेरिस दिमाग दौड़ाईस – ओह, फुटबॉल! सोचिस, चलव एला खेल के थोरकुन सरीर ला गरम कर ले जाय।

2THPC3

पाठ 4

Hkkyw us [kyh QVcky

गर्मी, नजर, हड़बड़ी, कोहरा, फुर्ती, आफत

सर्दियों का मौसम था। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सिमटकर गोल–मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे सोया हुआ था।

इधर भालू साहब सैर पर निकल तो आए थे लेकिन पछता रहे थे। तभी उनकी नज़र जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी।

आखें फैलाई, अक्ल दौड़ाई – अहा! फुटबॉल। सोचा, चलो इससे खेलकर कुछ गर्मी हासिल की जाए।

फेर डारा हा टूट गे। भलुवा साहेब झटकुन मामला ला समझ गे। पछताईस, फेर ओतकेच बेर दउड़

एती देखिस न ओती। भलुवा जी हा गोड़ ले बघवा के पिला ला उछाल दिस। हडबड़ा के बघवा के पिला हा दहाड़िस अउ फेर रूख के डारा ला धर लिस।

के झटकुन दूनों हाथ ला आघू करिस अउ बघवा के पिला ला झोंक लिस।

मगर डाल टूट गई। भालू साहब पछताए, लेकिन अगले ही पल

आव देखा न ताव। भालू जी ने पैर से उछाल दिया शेर के बच्चे को।

हड़बड़ी में शेर का बच्चा दहाड़ा और फिर पेड़ की एक डाल पकड़ ली।

दौड़कर फुर्ती से दोनों हाथ बढ़ाए और शेर के बच्चे को लपक लिया।

अरे ये का! बघवा के पिला हा फेर उछाले बर कहत रहिस।

एक घाँव फेर भलुवा बबा ओला उछालिस दू बेर, तीन बेर फेर बेर–बेर एही होवे लगिस। बघवा के पिला ला उछले मा मंजा

आत रहिस। फेर भलुवा हा थक के परसान हो गे रहय।

ओहो, का झंझट मा फँस गेंव।

बारहवाँ बेर उछाले के बाद भलुवा हा घर कोती दउड़ लगाईस अउ फेर तहाँ नई दिखिस।

अरे यह क्या! शेर का बच्चा फिर से उछालने के लिए कह रहा था।

एक बार फिर भालू दादा ने उछाला। दो बार तीन बार फिर बार–बार यही होने लगा। शेर के बच्चे को

उछलने में मज़ा आ रहा था। परंतु भालू थककर परेशान हो गया था।

ओह, किस आफत में आ फँसा। बारहवीं बार उछालते ही भालू ने घर की ओर दौड़ लगाई और गायब हो गया।

ये पँईत बघवा के पिला हा भर्‌रस ले भुइयाँ मा आगे। डारा तको टूट गे।

तभे माली उहाँ आइस अउ बघवा के पिला ऊपर तमकगे – "डारा ला टोर दे रूख के। दे डाँड।"

बघवा के पिला हा कहिस –

"थोरकिन बने त हो लँव।" माली हा कहिस ठीक हे। मैं अभी आवत हँव। माली के उहाँ ले जातेच बघवा पिला घलो नौ दू ग्यारा होगे। ओ हा सोंचिस – जीव बचिस त लाखों पाएन।"

शेर के बच्चे ने कहा – ज़रा ठीक तो हो लूँ । माली ने कहा ठीक है।

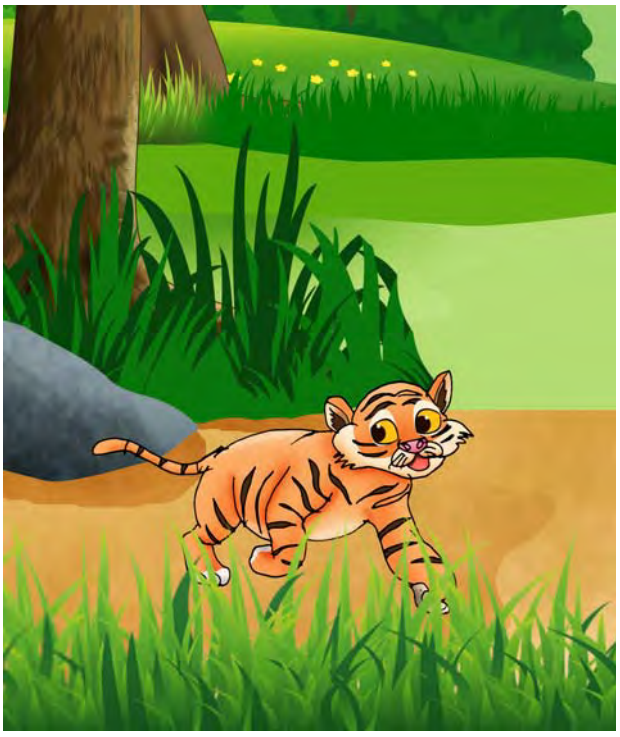

अब की बार शेर का बच्चा धड़ाम से ज़मीन पर आ गया। डाल भी टूट गई।

तभी माली वहाँ आया और शेर के बच्चे पर बरस पड़ा – डाल तोड़ दी पेड़ की। लाओ हर्जाना।

मैं अभी आता हूँ। माली के वहाँ से जाते ही शेर का बच्चा भी नौ दो ग्यारह हो लिया। उसने सोचा –जान बची तो लाखों पाए।

शिक्षण संकेत – पाठ आरंभ करने के पूर्व सर्दियों के मौसम और कोहरे के बारे में एवं ठंड से बचने के लिए किए जाने वाले उपाय के बार में चर्चा करवाएँ। साथ ही बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों के विषय में बातचीत करें । पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

आफत = झंझट, कोहरा = कुहरा वक्त = बेरा, लपक = झोंकना

अभ्यास

1. खाल्हे मा दे सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव।

कोहरा , सुबह , गायब , जमीन , हड़बड़ी , जामुन

2. खाल्हे मा लिखाय सवाल के जवाब देवव –

क. बघवा के पिला हा रूख के डारा ला काबर धरिस?

ख. बघवा के पिला हा काबर दहाड़िस?

ग. भलुवा साहेब का बात बर पछताईस ?

घ. भलुवा हा काबर कहिस – ओहो, कोन झंझट मा फँस गेंव?

3. दे गे कहिनी ला पढ़ के ओला क्रम मा जमावव –

क. भलुवा हा बघवा के पिला ला उछाल दिस।

ख. बघवा के पिला हा रूख के डारा ला धर लिस।

ग. भलुवा घर कोती दऊड़ लगाईस।

घ. भलुवा साहेब घूमे बर निकल गिस।

ड. भलुवा हा बघवा के पिला ला झटकुन झोंक लिस।

4. का होतिस अदि –

(क) भलुवा हा बघवा के पिला ला नइ पकड़तिस?

(ख) बघवा के पिला नौ दू ग्यारा नइ होतिस?

5. करके देखव –

क. जब भलुवा हा बघवा के पिला ला उछालिस, ओ हा दहाड़िस।
ओखर दहाड़े के अवाज कइसे होही, बोल के देखावव।

ख. खाल्हे मा लिखाय बुता ला कइसे करथें? कक्षा मा करके बतावव।

झोंकना	फेंकना
मूड़ कोरना	मोजा पहिनना
दबे पाँव रेंगना	धोवाय कपड़ा निचोना।

शिक्षण संकेत – पाठ आरंभ करने के पूर्व सर्दियों के मौसम और कोहरे के बारे में एवं ठंड से बचने के लिए किए जाने वाले उपाय के बार में चर्चा करवाएँ। साथ ही बच्चों के द्वारा खेले जाने वाले खेलों के विषय में बातचीत करें । पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

आफत = मुसीबत, कोहरा = धुंध, वक्त = समय, लपक = पकड़

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ ।

कोहरा, सुबह, गायब, जमीन, हड़बड़ी, जामुन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो ।

क. शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल क्यों पकड़ी ?

ख. शेर का बच्चा क्यों दहाड़ा ?

ग. भालू साहब किस बात पर पछताए ?

घ. भालू ने क्यों कहा – ओह! किस आफत में आ फँसा ?

3. दिए हुए वाक्यों को पढ़कर पढ़ी गई कहानी के क्रम में जमाओं –

क. भालू ने शेर के बच्चे को उछाल दिया।

ख. शेर के बच्चे ने पेड़ की डाल पकड़ ली।

ग. भालू ने घर की ओर दौड़ लगाई।

घ. भालू साहब सैर को निकले।

ड. भालू ने शेर के बच्चे को लपक कर पकड़ लिया।

4. क्या होता अगर –

क. भालू शेर के बच्चे को न पकड़ता ?

ख. शेर का बच्चा नौ दो ग्यारह न होता ?

5. करके देखो –

क. जब भालू ने शेर के बच्चे को उछाला, वह दहाड़ा।
उसके दहाड़ने की आवाज़ कैसी होगी, बोलकर दिखाओ।

ख. नीचे लिखे कामों को कैसे करते हैं ? कक्षा में करके बताओ।

लपकना	फेंकना
कंघी करना	मोज़ा पहनना
दबे पाँव चलना	धुले कपड़े निचोड़ना

6. बघवा के पिला हा सुनाइस आपबीती

बघवा के पिला हा घर जाके अपन दाई–ददा ला अपन कहिनी सुनाईस। ओ हा का–का सुनाईस होही? बतावव।

7. खेल–खेल मा

क. फुटबॉल ला **फुटबॉल** काबर कहत होहीं ?

ख. अइसन खेल मन के नाँव बतावव जेमा गेंद बउरथें ?

पिट्ठुल ....

8. तुँहर समझ ले

जाड़ ले बाँचे बर बघवा के पिला हा गुटूमुटू होके बइठगे रहिस।

तुहर बिचार मा बघवा के पिला हा जाड़ ले बाँचे बर अउ का–का कर सकत रहिस?

9. जाड़ ले बचना

भलुवा हा जाड़ ले बाँचे बर फुटबाल खेले बर सोंचिस। तुमन जाड़ ले बाँचे बर का–का करथो? (✓) के चिन्हा लगावव।

क. दऊड़ लगाथौ।

ख. गरम कपड़ा पहिन के घर मा बइठथौ।

ग. रजई ओड़थौ।

घ. आगी तापथौ।

ड. जुड़ पानी पीथौ।

च. तात पानी मा नहाथौ।

छ. तात–तात चहा पीथौ।

6. शेर के बच्चे ने सुनाई आपबीती

शेर के बच्चे ने घर जाकर अपने माता–पिता को अपनी कहानी सुनाई। उसने क्या–क्या सुनाया होगा? बताओ।

7. खेल–खेल में

क. फुटबॉल को **फुट बॉल** क्यों कहते होंगे?

ख. ऐसे खेलों के नाम बताओ जिनमें **बॉल** (गेंद) का इस्तेमाल करते हैं।

पिट्ठूल ....

8. तुम्हारी समझ से

ठंड से बचने के लिए शेर का बच्चा गोल–मटोल सिमटकर बैठ गया था।

तुम्हारे विचार से शेर का बच्चा ठंड से बचने के लिए और क्या–क्या कर सकता था?

9. ठंड से बचना

भालू ने ठंड से बचने के लिए फुटबॉल खेलने की बात सोची। तुम ठंड से बचने के लिए क्या–क्या करते हो ? (✓) का निशान लगाओ।

क. दौड़ लगाते हो।

ख. गर्म कपड़े पहनकर घर में बैठते हो।

ग. रज़ाई ओढ़ते हो।

घ. आग तापते हो।

ड. ठंडा पानी पीते हो।

च. गर्म पानी में नहाते हो।

छ. गर्म–गर्म चाय पीते हो।

2U6KDQ

ikB 5

prjk phdi

बिलई, मौसी , चानी , भितरी , दऊँड़

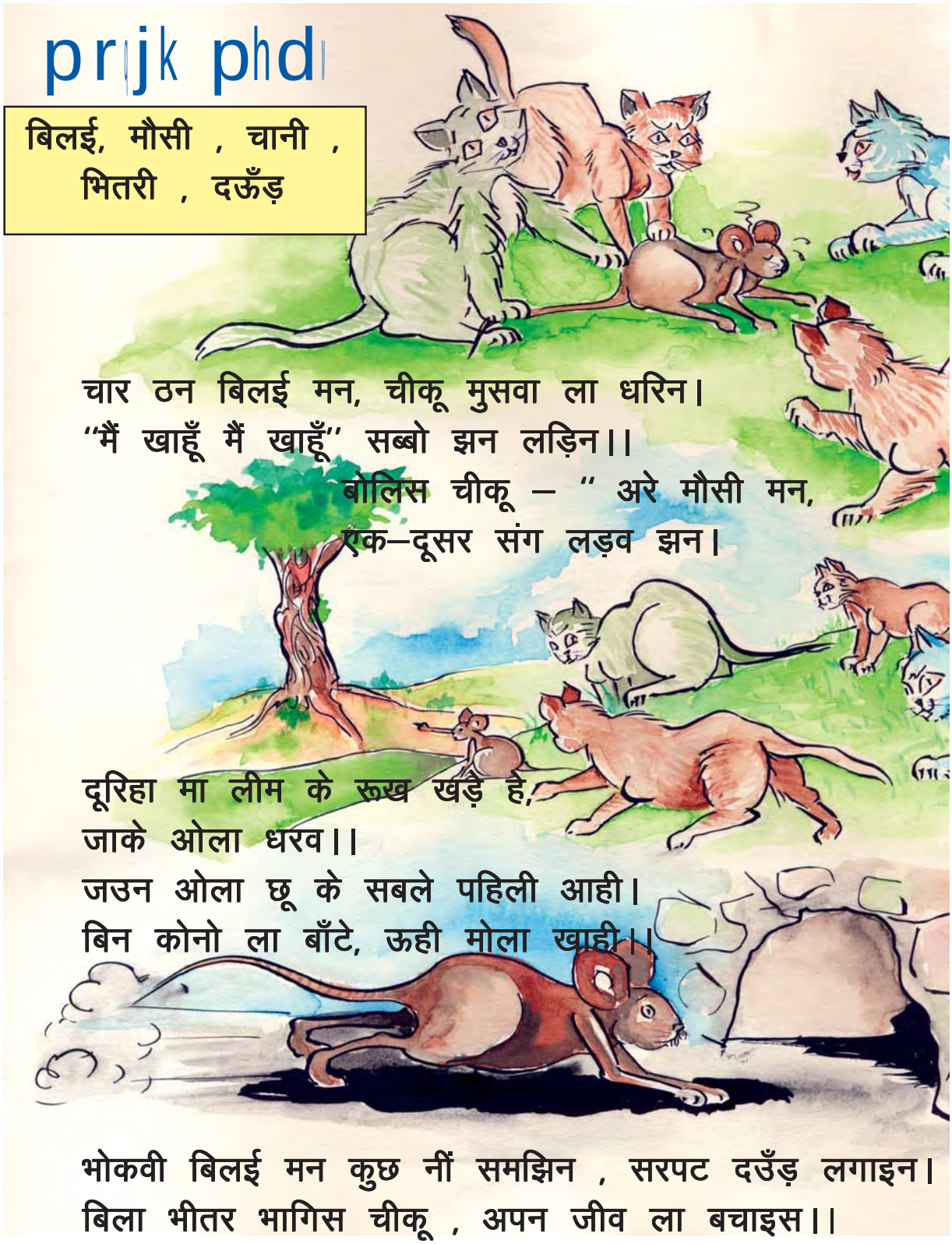

चार ठन बिलई मन, चीकू मुसवा ला धरिन।
"मैं खाहूँ मैं खाहूँ" सब्बो झन लड़िन।।
बोलिस चीकू – " अरे मौसी मन,
एक–दूसर संग लड़व झन।
दूरिहा मा लीम के रूख खड़े हे,
जाके ओला धरव।।
जउन ओला छू के सबले पहिली आही।
बिन कोनो ला बाँटे, ऊही मोला खाही।।
भोकवी बिलई मन कुछ नीं समझिन , सरपट दउँड़ लगाइन।
बिला भीतर भागिस चीकू , अपन जीव ला बचाइस।।

ikB 5

2UFGFD

pkykd phd

बिल्ली मौसी हिस्सा
अंदर दौड़

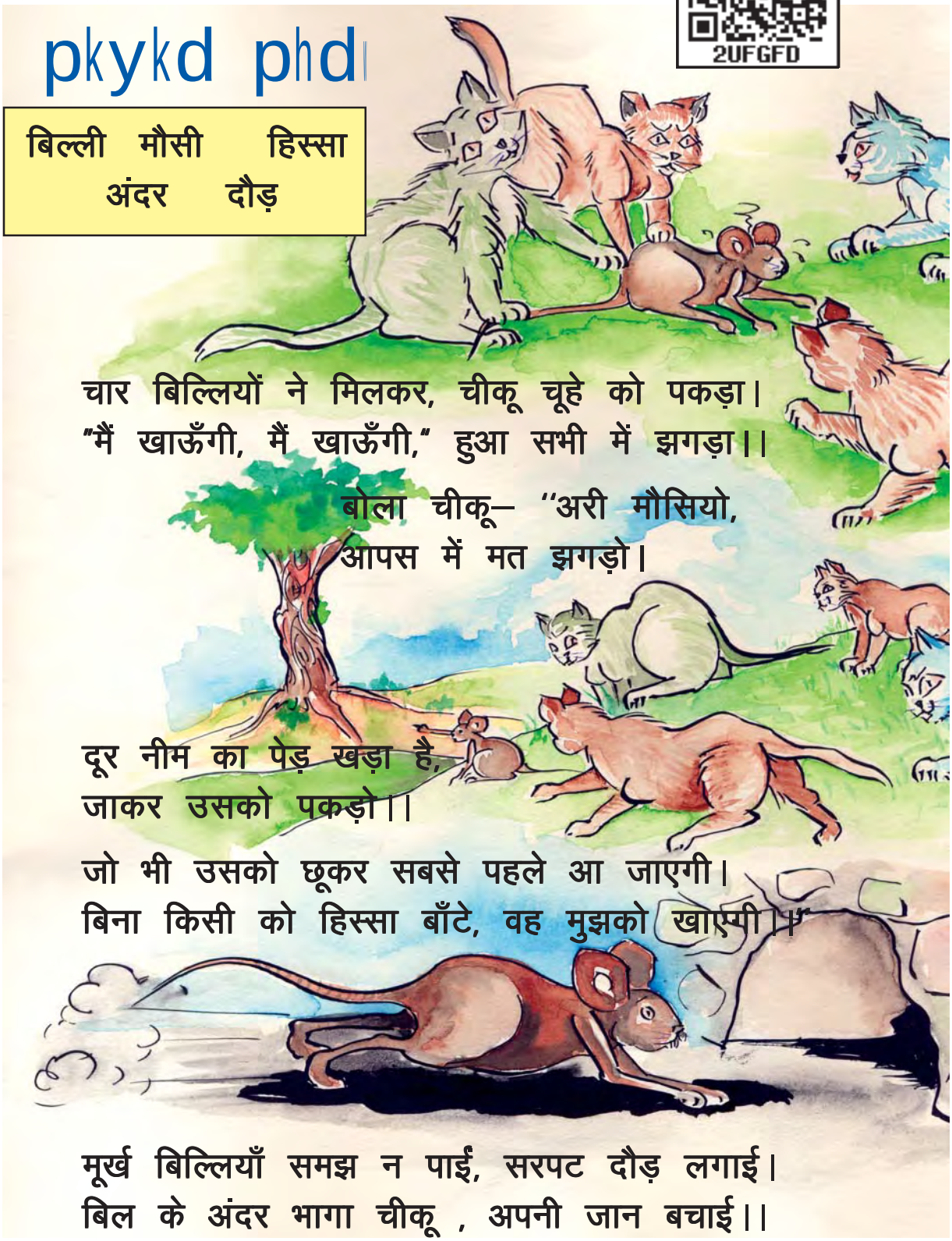

चार बिल्लियों ने मिलकर, चीकू चूहे को पकड़ा।
"मैं खाऊँगी, मैं खाऊँगी," हुआ सभी में झगड़ा।।

बोला चीकू– "अरी मौसियो,
आपस में मत झगड़ो।

दूर नीम का पेड़ खड़ा है,
जाकर उसको पकड़ो।।

जो भी उसको छूकर सबसे पहले आ जाएगी।
बिना किसी को हिस्सा बाँटे, वह मुझको खाएगी।।"

मूर्ख बिल्लियाँ समझ न पाईं, सरपट दौड़ लगाई।
बिल के अंदर भागा चीकू , अपनी जान बचाई।।

शिक्षण संकेत – कविता पठन के पूर्व चूहे तथा बिल्ली के स्वभाव को लेकर बच्चों से बातचीत करें। लय तथा अभिनय के साथ कविता को प्रस्तुत करें। फिर बच्चों से उसी तरह दुहराने को कहें। चूहे की चालाकी के संबंध में बच्चों से प्रश्न करें। अभ्यास माला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। उत्तर की जाँच करें। गलत उत्तरों को पुनः सुधारने के लिए कहें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताएँ।

अभ्यास

1. खाल्हे मा दिए सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव।

बिल्ली, मौसी , हिस्सा , अंदर, चूहा , पेड़

2. कविता के जेन सब्द मा ' ड़ ' वर्ण आये हवय। ओ सब्द मन ला छाँट के लिखव।

दऊँड़ ——— ——————— ———————

3. वाक्य मन मा आये बदलाव मा लकीर खिंचव।

में कहाँ जावत हों ?	हमन कहाँ जावत हन ?
ते कहाँ जावत हस ?	तुमन कहाँ जावत हो ?
ओ कहाँ जावत हे ?	ओमन कहाँ जावत हे ?

4. सोच के बतावव।

1. कविता ला कहानी मा सुनावव।
2. मुसवा अउ बिलई मा कोन चतुरा रहिस?
3. मुसवा, हा बिलईमन ले बाँचे बर अउ का उदिम कर सकत रहिस ?

शिक्षण संकेत – कविता पठन के पूर्व चूहे तथा बिल्ली के स्वभाव को लेकर बच्चों से बातचीत करें। लय तथा अभिनय के साथ कविता को प्रस्तुत करें। फिर बच्चों से उसी तरह दुहराने को कहें। चूहे की चालाकी के संबंध में बच्चों से प्रश्न करें। अभ्यास माला को पेंसिल से पूरा करवाएँ। उत्तर की जाँच करें। गलत उत्तरों को पुनः सुधारने के लिए कहें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताएँ।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

बिल्ली, मौसी, हिस्सा, अंदर, चूहा, पेड़

2. पढ़ो और समझो।

बिल्ली	–	बिल्लियाँ	नारी	–	नारियाँ
ताली	–	.....	लाठी	–	.....
आरी	–	.....	साड़ी	–	.....

3. कविता के जिन शब्दों में 'ड़' वर्ण आया है, उन शब्दों को छाँटकर लिखो।

दौड़ ———— ———————— ————————

4. वाक्यों में आए परिवर्तन को रेखांकित करो।

मैं कहाँ जा रहा हूँ ?	हम कहाँ जा रहे हैं ?
तुम कहाँ जा रहे हो ?	तुम लोग कहाँ जा रहे हों ?
वह कहाँ जा रहा है ?	वे कहाँ जा रहे हैं ?

5. सोचकर बताओ –

1. कविता को कहानी में सुनाओ ।
2. चूहा और बिल्ली में कौन अधिक चालाक था ?
3. चूहा बिल्लियों से बचने के लिए और क्या तरीका अपना सकता था ?

6. पढ़व अउ समझव।

7. फोटू बनावव अउ ओखर बारे मा लिखव – (कोनो एक)

बिलई , मुसवा , भठेलिया

---

6. पढ़ो और समझो।

7. चित्र बनाओ और उसके बारे में लिखो – (कोई एक)

बिल्ली, चूहा, खरगोश

33F89I

पाठ 6

चाँटी अउ हाथी

सूँड , झगरा , पेलम पेलई , फूँक , बित्ता , उदिम , अक्कल

एकठन रानी चाँटी रहिस। ओ हा खाना खोजे बर रोज जंगल जावय। सब्बो चाँटी मन ओखर संग जाएँ।

ओ जंगल मा एक ठन हाथी रहिस। ओ दिन भर घुमत रहय। कभू ये रूख ला टोरे त कभू ओ रूख ला टोरे। कुछु ला खाय अउ कुछु ला फेंक देवय। अपन सूँड मा पानी भरय अउ नहावय। दूसर जानवर मन ला पानी ले भिंजो देवय।जानवर मन संग पेलम–पेली घलो करय,चाँटी मन ला चपक देवय। सब्बो झन ओखर ले डरावँय। ओला कोनो कुछु नइ कहय। हाथी ले सब्बो झन परसान रहिस।

एक दिन रानी चाँटी हा हाथी ला भेंटिस त बोलिस – '' तें दूसर मन ला परसान करथस, ये बने बात नोहे।

'' हाथी बोलिस – '' चुप रहा। नानकुन जीव अउ बित्ता भर जीभ। मोर मर्जी,में जउन चाहे करहूँ।

पाठ 6

चींटी और हाथी

सूँड़ जंग धक्का–मुक्की फूँक बित्ता जुगत अक्ल

एक रानी चींटी थी। भोजन की तलाश में वह रोज जंगल जाती। सभी चींटियाँ उसके साथ जातीं।

उस जंगल में एक हाथी रहता था। वह दिनभर घूमता रहता था। कभी इस पेड़ को तोड़ता, कभी उस पेड़ को तोड़ता। कुछ खाता, कुछ फेंक देता। लंबी सूँड़ में पानी भरता और नहाता। दूसरे जानवरों को पानी से भिगोता। जानवरों से वह धक्का–मुक्की भी करता, चींटियों को मसल देता। सभी उससे डरते थे। उससे कोई कुछ न कहता। हाथी से सभी तंग थे।

एक दिन की बात है। रानी चींटी हाथी से मिली। वह बोली, "तुम दूसरों को सताते हो, यह ठीक नहीं।"

हाथी बोला, "चुप रह! छोटी–सी जान, बित्ता भर जुबान। मेरी मर्जी, मैं चाहे जो करूँ।

रानी चाँटी बोलिस – '' बघवा ला कहि दूँहूँ। ''

हाथी हाँस के बोलिस – '' बघवा ला का कहिबे ? वो मोर दम म मुखिया हे।'' रानी चाँटी चुप होगे। ओ हा काँदी मा जाके लुका गे। हाथी ऐती–ओती घुमत रहिस।

रानी चाँटी चुपेचुप ओखर सूँड मा घुसर गे। हाथी अपन मजा मा रहिस। चाँटी सूँड के भीतर मा घुसरत गिस।

अब रानी चाँटी हा सूँड ला चाबे बर सुरू करिस। हाथी हलाकान होये लगिस। ओ हा जोर–जोर से सूँड़ ला पटकीस। फूँक मारिस। कोनो उदिम काम नइ आईस। रानी चाँटी चाबना बंद नइ करिस। हाथी चिल्ला परिस।

तब रानी चाँटी हा बोलिस – ''आइस मंजा बाबू! अब काबर रोवत हस? आईस मामादाई के सुरता? रानी चाँटी हाथी ला चाबते रहिस। हाथी गिरगे। बोलिस – '' रानी चाँटी, रानी चाँटी ! माफी दे दे , माफी दे दे। अब कोनो ला परसान नइ करँव। कोनो ला छोटे नइ मानव। '' रानी चाँटी सोचिस, '' हाथी के अब अकल आगे।'' रानी चाँटी सूँड़ ले बाहिर आइस अउ बोलिस – '' हाथी बबा! हाथी बबा! जमाना बदल गे हे।

हाथी सूँड उँचाके हुँकारू दिस।

शिक्षण संकेत – पाठ में निहित उद्देश्य एवं मूल्य को बच्चों को समझाएँ। अन्य छोटी–छोटी कहानियों से बच्चों में सुनने की क्षमता विकसित करें। स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए कहानी में निहित मूल्यों का ज्ञान कराएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों का अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

रानी चींटी बोली–''शेर जी से कह दूँगी।''

हाथी हँसकर बोला,

''शेर से क्या कहेगी ?

वह मेरे दम पर मुखिया है।''

रानी चींटी चुप हो गई। वह घास में जाकर छिप गई। हाथी इधर– उधर घूम रहा था।

रानी चींटी चुपके से उसकी सूँड़ में घुस गई। हाथी अपनी मौज में था। चींटी सूँड़ के अंदर घुसती ही गई।

अब रानी चींटी ने हाथी की सूँड़ को काटना शुरू किया। हाथी परेशान होने लगा। उसने जोर–जोर–से सूँड़ पटकी। फूँक लगाई। कोई जुगत काम न आई। रानी चींटी ने काटना बंद नहीं किया। हाथी चीख पड़ा।

तब रानी चींटी बोली, "आया मजा बच्चू! अब क्यों रोते हो ? आई नानी याद ?"

रानी चींटी हाथी को काटती रही। हाथी गिर पड़ा। बोला, ''चींटी रानी, चींटी रानी! माफ करो, माफ करो। अब किसी को नहीं सताऊँगा। किसी को छोटा न मानूँगा।'' रानी चींटी ने सोचा, "हाथी को अब आई अक्ल"। रानी चींटी सूँड़ से बाहर आई; बोली, ''हाथी दादा! हाथी दादा! जमाना बदल गया है।''

हाथी ने सूँड़ उठाकर हामी भरी।

शिक्षण संकेत – पाठ में निहित उद्देश्य एवं मूल्य को बच्चों को समझाएँ। अन्य छोटी–छोटी कहानियों से बच्चों में सुनने की क्षमता विकसित करें। स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए कहानी में निहित मूल्यों का ज्ञान कराएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों का अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

सताना = परसान करना
मौज = मस्ती
जुबान = जीभ
जुगत = उदिम
मर्जी = मन होना
हामी भरा = हुँकारू

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

सूँड , जंग , धक्का–मुक्की, फूँकना , जुगत , अक्ल

2. बतावव, कोन बात सही अउ कोन गलत हे।

क. सब्बो चाँटी रानी चाँटी संग जंगल जायँ। (––––––)
ख. हाथी जानवर मन ले मया करय। (––––––)
ग. रानी चाँटी चुप्पे हाथी के सूँड़ मा घुसरिस। (––––––)
घ. जंगल के जानवर मन रानी चाँटी ले परसान रहिन। (––––––)

3. उलटा मायने वाले सब्द ला पढ़व अउ समझव –

बने	–	गिनहा	भीतर	–	बाहरी
उप्पर	–	खाल्हे / तरी	दुखी	–	सुखी
जादा	–	कमती	बड़े	–	छोटे

4. खाल्हे लिखे सब्द मन के मदद ले वाक्य ला पूरा करव –

सूपा , सूँड़ , पूँछी , गोड़ , पाँखी , चोंच , दाँत , आँखी

क. सुआ के ..... लाल होथे।
ख. हाथी के ..... लंबा होथे।
ग. चिरई के दू ठन ..... होथे।
घ. जानवर के चार ठन ..... होथे।
ङ. कुकुर के ..... टेड़गा होथे।
च. हाथी के कान ..... जइसन होथे।
छ. हाथी के ..... बड़े–बड़े होथे।
ज. हाथी के ..... नानुक होथे।

शब्दार्थ

सताना	=	तंग करना	मौज	=	मस्ती
जुबान	=	जीभ	जुगत	=	तरकीब, उपाय
मर्जी	=	इच्छा	हामी भरना	=	हाँ कहना

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ–

सूँड़, जंग, धक्का–मुक्की, फूँकना, जुगत, अक्ल

2. बताओ, कौन–सी बात सही और कौन–सी गलत है।

क. सभी चींटियाँ, रानी चींटी के साथ जंगल जाती थीं। (––––––)

ख. हाथी जानवरों से प्यार करता था। (––––––)

ग. रानी चींटी चुपके से हाथी की सूँड़ में घुसी। (––––––)

घ. जंगल के जानवर रानी चींटी से परेशान थे। (––––––)

3. उल्टे अर्थ वाले शब्दों को पढ़ो व समझो –

अच्छा	–	बेकार	भीतर	–	बाहर
ऊपर	–	नीचे	दुखी	–	सुखी
ज्यादा	–	कम	बड़ा	–	छोटा

4. नीचे लिखे शब्दों की सहायता से वाक्य पूरे करो –

सूपा	सूँड़	पूँछ	पैर	पंख	चोंच	दाँत	आँखें

क. तोते की –––––––––––––––– लाल होती है।

ख. हाथी की –––––––––––––––– लम्बी होती है।

ग. चिड़िया के दो –––––––––––––– होते हैं।

घ. जानवरों के चार –––––––––––––– होते हैं।

ङ. कुत्ते की –––––––––––––––––– टेढ़ी होती है।

च. हाथी के कान –––––––––––––– जैसे होते हैं।

छ. हाथी के –––––––––––––––––– बड़े–बड़े होते हैं।

ज. हाथी की –––––––––––––––––– छोटी होती हैं।

5. गतिविधि :–

तिर–तखार के अउ छोटकुन कहानी मन ला कक्षा मा सुनावव।

6. सोच के बतावव –

फेर जब चाँटी अउ हाथी के भेंट होही त दूनों का गोठ–बात करहीं ?

.... ।

.... ।

.... ।

.... ।

7.चाँटी हा जंगल मा का–का खाइस होही ? तुमन का–का खाथो ?

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

5. गतिविधि :–
आसपास की अन्य छोटी कहानियाँ कक्षा में सुनाओ ।

6. सोंचकर बताओ –
अगली बार जब चींटी और हाथी मिलेंगे तो आपस में क्या बातचीत करेंगे ?

.... ।

.... ।

.... ।

.... ।

7. चींटी ने जंगल में क्या – क्या खाया होगा ? तुम क्या – क्या खाते हो ?

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

8. चाँटी ला जंगल मा खाय बर अउ का–का मिले होही , उखर नाव लिखव।

....

....

....

....

9. जंगल के फोटू बना के रंग भरव –

8. चींटी को जंगल में खाने के लिए और क्या – क्या मिला होगा, उनके नाम लिखो।

....

....

....

....

9. जंगल का चित्र बनाकर रंग भरो –

33XZCT

पाठ 7

एका के बल

पीपर , परेवा , खाना , भुइयाँ , आरो देना , ओ , मदद , डोकरा,

जंगल मा एकठन पीपर के रूख रहिस। ओ रूख मा अड़बड़ अकन परेवा रहत रहिन। परेवा मन दिन भर दाना–पानी के खोज मा उड़त रहाय। रात होय त ओ सब्बो झन पीपर के रूख मा लहुँट आँय।

एक दिन के बात हे। परेवा मन दाना–पानी के खोज मा उड़ीन।

थोरकिन दूरिहा उड़े के बाद एकठन नान्हे परेवा हा बोलिस –''देखव, ओती देखव। भुइयाँ मा अड़बड़ अकन दाना छितराय हे। ''

सब्बो परेवा ओती देखे लगीन। ओमन ला भुइयाँ मा अड़बड़ अकन दाना दिखिस। ओमन धिरलगहा नीचे उतरे लगिन।

तभे एकठन सियनहा परेवा बोलिस , – '' रुकव रुकव ! अभी उहाँ झन जावव। जंगल मा अतका दाना कहाँले आईस? ''

दूसर परेवा बोलिस –''कहूँ ले आए हो। '' आवव हमन जुरमिल के दाना खाबो। परेवा मन भुइयाँ मा उतरिन। ओमन दाना खाये लगिन। फेर सियनहा परेवा हा ओखर मन संग नइ गिस। ओ हा दूरिहा ले देखत रहिस। परेवा मन अघात ले दाना खाइन। अब ओमन उड़े चाहत रहिस , फेर उड़े नइ सकिन। ओ मन फंदा मा अरझ गे रहिन। परेवा मन चिल्लाय लगिन '' बचावव बचावव, हमन फाँदा मा अरझ गे हन। ''

पाठ 7

एकता का बल

347VEG

पीपल कबूतर भोजन धरती चिल्लाना बहेलिया
क्षमा इशारा मित्र उन्हें मदद बूढ़ा धन्यवाद

जंगल में पीपल का एक पेड़ था। उस पेड़ पर बहुत–से कबूतर रहते थे। कबूतर दिनभर भोजन की खोज में उड़ते रहते। रात होने पर वे सब पीपल के पेड़ पर लौट आते।

एक दिन की बात है। कबूतर भोजन की तलाश में उड़े। थोड़ी दूर उड़ने पर एक छोटा कबूतर बोला, "देखो, उधर देखो। धरती पर कितना दाना बिखरा पड़ा है।"

सभी कबूतर उधर देखने लगे। उन्हें धरती पर बहुत–सा दाना दिखाई पड़ा। वे धीरे–धीरे नीचे उतरने लगे।

तभी एक बूढ़ा कबूतर बोला, "ठहरो, ठहरो। अभी वहाँ मत जाओ। जंगल में इतना दाना कहाँ से आया?"

दूसरा कबूतर बोला, "कहीं से भी आया हो। आओ, हम सब मिलकर दाना चुगें।"

कबूतर धरती पर उतर गए। वे दाना चुगने लगे। पर बूढ़ा कबूतर उनके साथ नहीं गया। वह दूर से ही देखता रहा। कबूतरों ने पेट भर दाना खाया। अब वे उड़ना चाहते थे, पर उड़ न सके। वे जाल में फँस गए थे। कबूतर चिल्लाने लगे, "बचाओ, बचाओ, हम जाल में फँस गए हैं।"

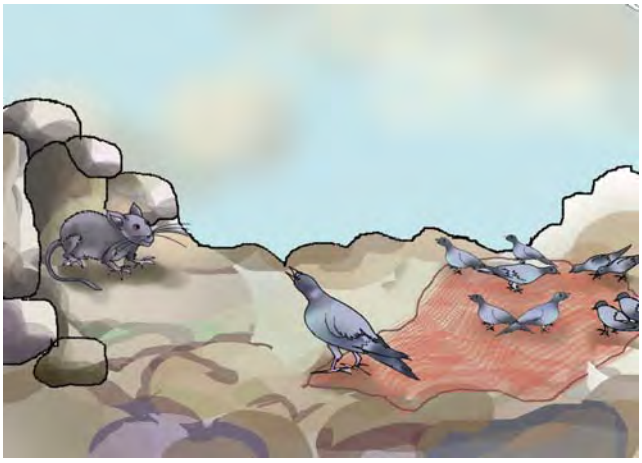

तभे एकठन परेवा हा चिल्लइस, '' ओती देखव! अरे, अरे ओ तो सिकारी हे। ओ हा हमन ला धरे बर आवत हे। ''

सियनहा परेवा हा बोलिस, ''डर्रावव झन। सब्बो जुरमिल के ताकत लगावव। फाँदा ला लेके एक्के संघरा उड़ा जावव।''

सब्बो परेवा मन जुरमिल के जोर लगाइन। फांदा एक कन उठीस, त परेवा मन अउ जोर लगाइन।

अब परेवा मन फाँदा ला ले के उड़ाय लगिन। सियनहा परेवा आघू–आघू उड़ात रहिस। सब परेवा मन ओखर पीछू रहिस।

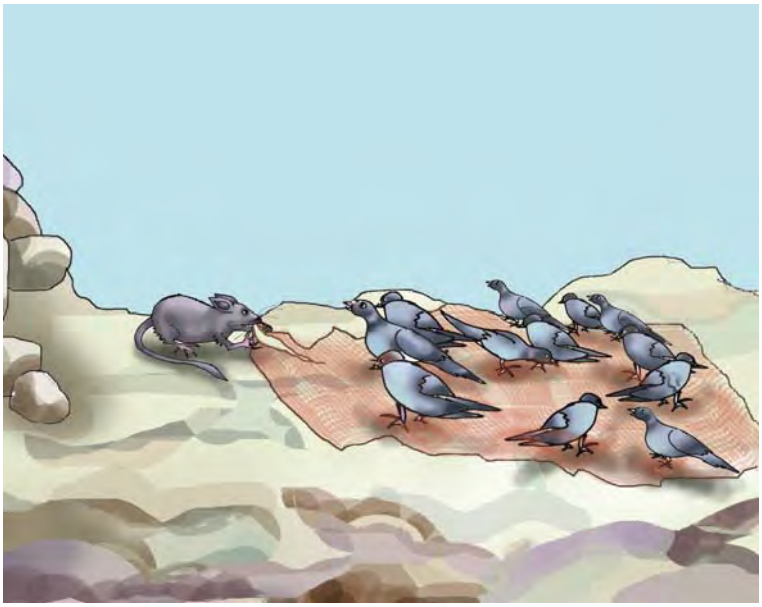

सियनहा परेवा ओमन ला लेके दूरिहा उड़ा गे। ओहा एकठन टूटहा–फूटहा घर कोती देखा के कहिस, '' इहाँ एकठन मुसवा रहिथे। ओ मोर संगवारी हे। ओ हमर मदद करही। इहें उतर जावव। ''

सियनहा परेवा हा मुसवा ला बलाईस। मुसवा हा फाँदा ला कतर दिस। परेवा मन फाँदा ले निकल गीन। ओमन मुसवा ला धन्यवाद दीन। सब्बो परेवा मन अब सियनहा परेवा ले माफी माँगिन अउ ओला धन्यवाद दीन।

शिक्षण संकेत – एकता का अर्थ बच्चों को बताएँ। कक्षा में रखी मेज को किसी एक बच्चे से हटाने को कहें फिर वही मेज उस बच्चे के साथ पाँच अन्य बच्चे मिलकर हटाएँ। बच्चे ने क्या महसूस किया उसे कक्षा के अन्य बच्चों से साझा करवाएँ। एकता की कोई अन्य कहानी कक्षा में सुनाएँ। कठिन भावों को बच्चों की भाषा में स्पष्ट करें।

तभी एक कबूतर चिल्लाया, ''उधर देखो। अरे, अरे, वह तो बहेलिया है। वह हमें पकड़ने आ रहा है।''

बूढ़ा कबूतर बोला, ''घबराओ मत। सब मिलकर जोर लगाओ। जाल को लेकर एक साथ उड़ चलो।''

सभी कबूतरों ने मिलकर जोर लगाया। जाल कुछ ऊँचा उठा तो कबूतरों ने और जोर लगाया।

अब कबूतर जाल लेकर उड़ने लगे। बूढ़ा कबूतर आगे–आगे उड़ रहा था। सब कबूतर उसके पीछे थे।

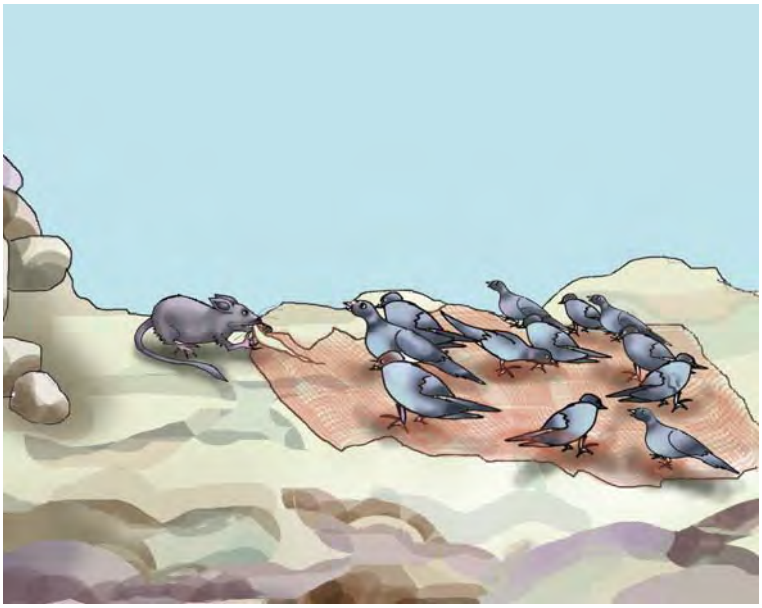

बूढ़ा कबूतर उन्हें लेकर बहुत दूर उड़ गया। उसने एक टूटे–फूटे मकान की तरफ इशारा किया। वह बोला, ''यहाँ एक चूहा रहता है। वह मेरा मित्र है। वह हमारी मदद करेगा। यहीं उतर जाओ।''

बूढ़े कबूतर ने चूहे को बुलाया। चूहे ने जाल काट दिया। कबूतर जाल से निकल आए। उन्होंने चूहे को धन्यवाद दिया। सभी कबूतरों ने अब बूढ़े कबूतर से क्षमा माँगी और उसे धन्यवाद दिया।

शिक्षण संकेत – एकता का अर्थ बच्चों को बताएँ। कक्षा में रखी मेज को किसी एक बच्चे से हटाने को कहें फिर वही मेज उस बच्चे के साथ पाँच अन्य बच्चे मिलकर हटाएँ। बच्चे ने क्या महसूस किया उसे कक्षा के अन्य बच्चों से साझा करवाएँ। एकता की कोई अन्य कहानी कक्षा में सुनाएँ। कठिन भावों को बच्चों की भाषा में स्पष्ट करें।

शब्दार्थ

पैर = गोड़, क्षमा = माफी, तलाश = खोज, मदद = सहायता
मित्र = मितान, सिकारी = जाल बिछाकर पक्षियों को पकड़ने वाला।

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा म बतावव –

बहेलिया , क्षमा , इशारा , मदद

2. खाल्हे लिखाय प्रश्न मन के उत्तर बतावव –

क. परेवा मन कहाँ रहत रिहिन ?

ख. नान्हे परेवा हा का देखिस ?

ग. सियनहा परेवा हा दूसर परेवा मन संग काबर नइ गिस ?

घ. परेवा मन काबर नइ उड़ा सकत रिहिन ?

ङ. सियनहा परेवा सब झन ल ले के कहाँ गिस ?

च. सब्बो परेवा मन सियनहा परेवा ले माफी काबर माँगिन ?

3. हमर मदद करइया कोन–कोन हे –

खाना बर – ....

स्वास्थ्य बर – ....

पढ़े बर – ....

कपड़ा बर – ....

4. सही सब्द छाँट के (✓) के चिन्हा लगावव –

(दाना, भुइयाँ, मदद , माफी , फांदा)

क. बहुत अकन दाना —————— मा छितराय रहिस। (भुइयाँ, अकास)

ख. जंगल मा अतेक —————— कहाँ ले आईस ? (दाना, खाना)

ग. परेवा —————— मा अरझ गे। (फांदा, चिखला)

घ. मूसवा हमर —————— करही। (मदद, दया)

ङ. परेवा मन हा सियनहा परेवा ले —————— मांगिन। (माफी, मदद)

शब्दार्थ

पाँव = पैर, क्षमा = माफी, तलाश = खोज, मदद = सहायता
मित्र = दोस्त, बहेलिया = जाल बिछाकर पक्षियों को पकड़ने वाला।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

बहेलिया, क्षमा, इशारा, मदद

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ –

क. कबूतर कहाँ रहते थे ?

ख. छोटे कबूतर ने क्या देखा ?

ग. बूढ़ा कबूतर दूसरे कबूतरों के साथ क्यों नहीं गया ?

घ. कबूतर क्यों नहीं उड़ सके ?

ङ बूढ़ा कबूतर सबको लेकर कहाँ गया ?

च. सभी कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से क्षमा क्यों माँगी ?

3. हमारे मददगार कौन – कौन हैं –

भोजन के लिए – ....

स्वास्थ्य के लिए – ....

शिक्षा के लिए – ....

कपड़ों के लिए – ....

4. सही शब्द चुनकर ✓ का निशान लगाओ।

(दाना, धरती, मदद, क्षमा, जाल)

क. बहुत–सा दाना ————— पर बिखरा था। (धरती, आसमान)

ख. जंगल में इतना ————— कहाँ से आया ? (दाना, खाना)

ग. कबूतर ————— में फँस गए। (जाल, कीचड़)

घ. चूहा हमारी ————— करेगा। (मदद, दया)

ङ कबूतरों ने बूढ़े कबूतर से ————— माँगी। (क्षमा, सहायता)

5. ङ , ढ़, त्र , क्ष वर्ण मन ले बने एक–एक सब्द खोज के लिखव –

———— ———— ———— ————

6. सही मिलान करके वाक्य बनावव अउ बोलव –

क.	परेवा	–	फाँदा कतर दिस।
ख.	मुसवा हा	–	आघू–आघू उड़ात रहिस।
ग.	परेवा मन	–	पीपर के रूख मा रहत रहिन।
घ.	सिहनहा परेवा	–	मुसवा ला धन्यवाद दिस।

7. पढ़व अउ समझव। दिये गे सब्द मन के जइसन सब्द बनाके लिखव –

सियान	–	सियानमन
मुसवा	–	————
गदहा	–	————
घोड़ा	–	————

8. दिये गे फोटू ला चिन्ह के वाक्य बनावव –

परेवा रूख म रहिथे।

परेवा..... खाथे ।

.....

.....

.....

5. ड़, ढ़, त्र, क्ष वर्णों से बने एक–एक शब्द खोजकर लिखो।

———— ———— ———— ————

6. सही मिलान कर वाक्य बनाओ और बोलो –

क.	कबूतर	–	जाल काट दिया।
ख.	चूहे ने	–	आगे–आगे उड़ रहा था।
ग.	कबूतरों ने	–	पीपल के पेड़ पर रहते थे।
घ.	बूढ़ा कबूतर	–	चूहे को धन्यवाद दिया।

7. पढ़ो और समझो। दिए गए शब्दों के अनुसार शब्द बनाकर लिखो।

बूढ़ा	–	बूढ़े	–	बूढ़ों
चूहा	–	————	–	————
गधा	–	————	–	————
घोड़ा	–	————	–	————

8. दिए गए चित्र को पहचानकर वाक्य बनाओ –

कबूतर पेड़ पर रहता है ।

कबूतर ..... चुगता है ।

.....

.....

.....

9. खाल्हे के फोटू उप्पर गोठ–बात करके कहानी बनावव ।

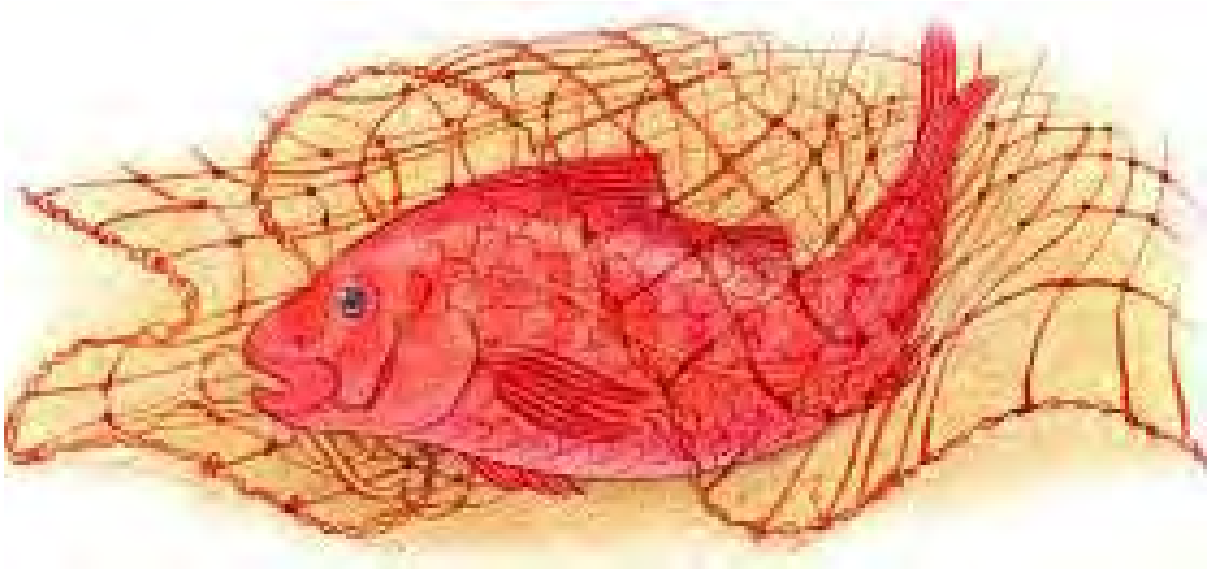

9. दिए गए चित्र पर चर्चा कर कहानी बनाओ।

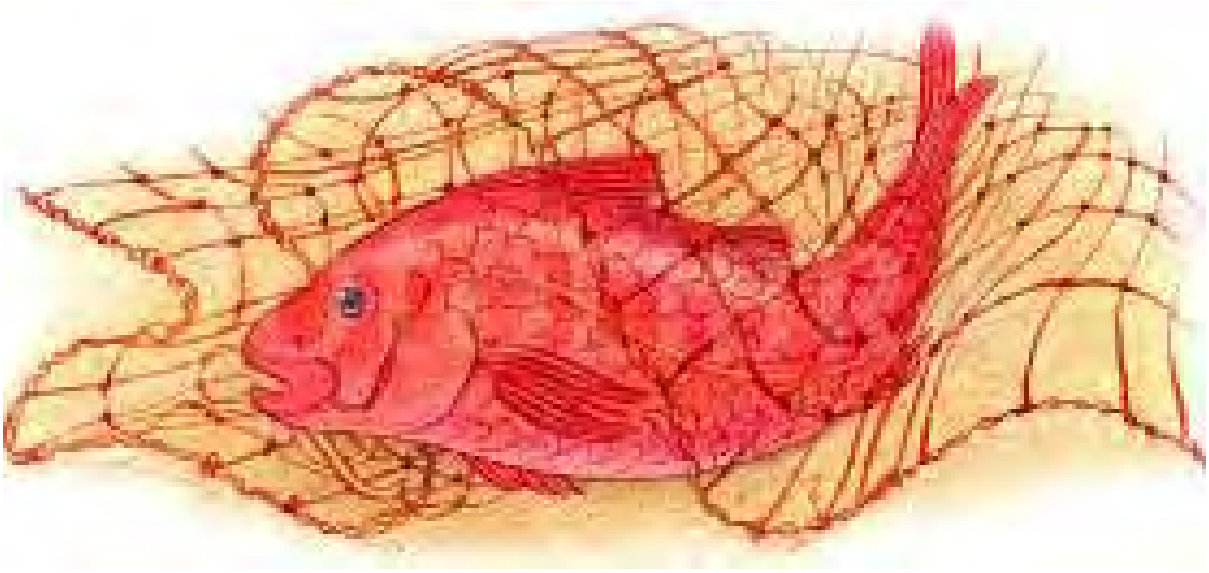

34GRG4

पाठ 8

कोन ?

चंदा , पियास , मुसकात , सवाल, निरमल

सोंचव चंदा नइ होतिस रात मा
रातकुन दिसा देखातिस कोन ?
नइ होतिस सुरुज त दिन ला
सोन सही चमकातिस कोन ?
नई होतिन निरमल नँदिया मन
दुनिया के पियास बुतातिस कोन?
नइ होतिस डोंगरी त,मीठ–मीठ
पानी के झरना बोहातिस कोन ?

नइ होतिन ये रूख, भला फेर
हरियाली बगरातिस कोन ?
नइ होतिन ये फूल बतावव,
फुल–फुलके मुस्कातिस कोन ?

नइ होतिन बादर अगास मा
इन्द्रधनुष बनातिस कोन ?
नइ होतेन हम तब बोलव,
ये सब सवाल उठातिस कोन ?

शिक्षण संकेत – लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहें। पहाड़, नदी, झरने, पेड़–पौधे, आदि पर चर्चा कर बच्चों को पर्यावरण की सरल छोटी–छोटी बातों से अवगत कराएँ। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

पाठ 8

कौन ?

34QMHR

चाँद	प्यास	मुस्काता
प्रश्न	निर्मल	इन्द्रधनुष

अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन ?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने–सा चमकाता कौन ?

अगर न होतीं निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन ?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन ?

अगर न होते पेड़, भला फिर
हरियाली फैलाता कौन ?
अगर न होते फूल बताओ,
खिल–खिलकर मुस्काता कौन ?

अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन ?
अगर न होते हम, तो बोलो,
ये सब प्रश्न उठाता कौन ?

शिक्षण संकेत – लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहें। पहाड़, नदी, झरने, पेड़–पौधे, आदि पर चर्चा कर बच्चों को पर्यावरण की सरल छोटी–छोटी बातों से अवगत कराएँ। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

शब्दार्थ

नभ	=	अगास	जग	=	दुनिया
पर्वत	=	डोंगरी	प्रश्न	=	सवाल
निर्मल	=	निरमल			

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

नभ , पर्वत , निर्मल , हरियाली , मिट्टी

2. 2. समझके एक–एक वाक्य मा उत्तर बतावव –

क. जेन रातकुन चंदा नइ निकले, वो रात कइसे होथे ?

_____

ख. हमन ला दिन के अँजोर काखर ले मिलथे ?

_____

ग. हरियाली काखर सेती दिखाई देथे ?

_____

घ. इन्द्रधनुष मा के ठन रंग होथे ?

_____

3. तुमन ला ये कविता के नाव बदले ला कहे जाय त तुमन का नाँव दुहू अउ काबर ?

4. का तुमन कभू इन्द्रधनुष देखे हव ? देखे हव त तुमन ला कोन–कोन रंग दिखाई देथे बतावव ?

शब्दार्थ

नभ	=	आकाश	जग	=	दुनिया, संसार
पर्वत	=	पहाड़	प्रश्न	=	सवाल
हरियाली	=	चारों ओर हरा–ही–हरा होना			
निर्मल	=	बिना मैल का, स्वच्छ, साफ			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

नभ, पर्वत, निर्मल, हरियाली, मिट्टी

2. समझकर एक–एक वाक्य में उत्तर लिखो।

क. जिस रात चाँद नहीं निकलता, वह रात कैसी लगती है?

_____

ख. दिन में उजाला हमें किससे मिलता है ?

_____

ग. हरियाली किनके कारण दिखाई पड़ती है ?

_____

घ. इंद्रधनुष में कितने रंग होते हैं ?

_____

3. अगर तुम्हें इस कविता का नाम बदलने को कहे तो तुम क्या नाम दोगे और क्यों?

4. क्या तुमने इन्द्रधनुष कभी देखा है ? देखा है तो तुम्हे कौन – कौन से रंग दिखाई देते हैं, बताओ ।

5. फोटू बनाके रंग भरव –

(रूख , डोंगरी , सूरुज , नदी, फूल , इन्द्रधनुष)

5. चित्र बनाकर रंग भरो –

(पेड़, पर्वत, सूरज, नदी, फूल, इंद्रधनुष)

34ZIJE

पाठ 9

माटी

माटी , बूँद , सँऊधे–सँऊधे , रंग बिरंगा , खेलवना , सलवना , मोल

गाँव, गली, खेत मा माटी
बाहिर माटी घर मा माटी।
टिप–टिप, टिप–टिप बूँद गिरय त
महकिस सँऊधे–सँऊधे माटी।।

माटी ले घर बने हे कतकोन,
माटी मा वो खड़े हे कतकोन।
सुग्घर फूल फुलाथे माटी,
सबके बोझा उठाथे माटी।।

गमला, मटकी बने हे सुग्घर,
रंग–रंग के खेलौना सुग्घर।
कोनो मोल नइ लेथे माटी,
सोंचव का–का देथे माटी।।

शिक्षण संकेत :– कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों को दुहराने के लिए कहें। कविता में आए अपरिचित शब्दों का अपनी भाषा में अर्थ बताएँ। अभ्यास के प्रश्नों में दिए गए निर्देशों को पढ़कर बच्चों को समझाएँ व अभ्यास के प्रश्नों को पेंसिल से हल करवाएँ।

पाठ 9

मिट्टी

359EL2

मिट्टी, बूँद, सोंधी–सोंधी, सुंदर, रंग–बिरंगे, खिलौने, सलोने, मोल

गाँव, गली, खेतों में मिट्टी
बाहर मिट्टी, घर में मिट्टी।
टप–टप, टप–टप बूँद पड़ी तो,
महकी सोंधी–सोंधी मिट्टी।।

मिट्टी से घर बने हैं कितने,
मिट्टी पर वे खड़े हैं कितने।
सुंदर फूल खिलाती मिट्टी,
सबका बोझ उठाती मिट्टी।।

गमले, मटके सजे सलोने,
रंग–बिरंगे बने खिलौने।
कुछ भी मोल न लेती मिट्टी,
सोचो क्या–क्या देती मिट्टी।।

शिक्षण संकेत :– कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों को दुहराने के लिए कहें। कविता में आए अपरिचित शब्दों का अपनी भाषा में अर्थ बताएँ। अभ्यास के प्रश्नों में दिए गए निर्देशों को पढ़कर बच्चों को समझाएँ व अभ्यास के प्रश्नों को पेंसिल से हल करवाएँ।

का कोनो भी माटी के खेलौना बनाये जा सकथे ?

मोनू अउ जय मड़ई मा गिन। मड़ई मा ओमन सुग्घर–सुग्धर खेलौना देखिन। घर आके उहू मन खेलौना बनाना चाहिन। घर के आघू मा मुरमी परे रहिस। वो दुनों झन मुरूम के खेलौना बनाये लगीन। फेर मुरमी ले खेलौना नइ बनय। मूरमी मा लुकाये मेकरा हा उदक के किहिस – '' अरे, मोनू! ये माटी म खेलवना नइ बनय। चलव, हमन कहूँ बने माटी खोजथन ? थोइकिन दुरिहा मा एक ठन घर बनत रहिस। आघू मा रेती के कूढ़ा बने रहिस। मोनू, जय अउ मेकरा हा खेलौना बनाय बर रेती मा पानी डारिन, रेती मा ले पानी बोहा गे। रेती मा लुकाय घोंघा हा कहिस, '' जय भाई! ये तो रेती हे , एखर खेलौना नइ बनय।'' ऊहें एकठन गेंगरुवा माटी खोदत रहिस। ओ रेंगत आइस अउ टोटा मटका के कहिस– '' मोनू दीदी! नँदिया के माटी ले बने खेलौना बनही। '' सब्बो झन नँदिया के तिर के माटी खोदिन। माटी ले काँदी निकालिन, माटी ला एक जघा सकेलिन। सब्बो झन जुरमिल के खेलौना बनाइन।

शब्दार्थ

सलोने = सुग्घर, मोल = कीमत

सँऊधे–सँऊध = सूरखा माटी मा पानी परे ले उठने वाला महक

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सवाल के उत्तर अपन भाखा मा बतावव –

क. माटी ले का–का जिनिस बनथे ?

ख. खेलौना कोन–कोन जिनिस ले बनथे ?

2. खाल्हे लिखाय सब्द मन ला पढ़व अउ लिखव –

गाँव – .....। माटी – .....।

संऊधे – .....। सुग्घर – .....।

रंग–बिरंगे – .....। सलोने – .....।

3. पढ़व अउ समझ के लिखव –

गाँव – पाँव, छाँव, ..., ... फूल – ..... ,.....

महर – ..... ,..... फूलथे – ..... ,.....

गली – ..... ,.....

क्या किसी भी मिट्टी से खिलौने बनाए जा सकते हैं?

मोनू और जय मेले में गए। मेले में उन्होंने सुंदर–सुंदर खिलौने देखे। घर आकर उन्होंने भी खिलौने बनाने चाहे। घर के सामने मुरम पड़ी थी। वे दोनों मुरम के खिलौने बनाने लगे। पर मुरम के खिलौने नहीं बने। मुरम में छिपी मकड़ी ने उचककर कहा, ''अरे, मोनू! इस मिट्टी के खिलौने नहीं बनेंगे। चलो, हम कहीं अच्छी मिट्टी ढूँढ़ते हैं।'' थोड़ी दूर एक मकान बन रहा था। सामने रेत का ढेर लगा था। मोनू, जय और मकड़ी ने खिलौने बनाने के लिए रेत में पानी डाला। रेत में से पानी बह गया। रेत में छिपे घोंघे ने कहा, ''जय भैया! यह तो रेत है, इसके खिलौने नहीं बनेंगे।'' वहीं एक केंचुआ मिट्टी खोद रहा था। वह रेंगता हुआ आया और गर्दन मटकाकर बोला, ''मोनू दीदी! नदी की मिट्टी के खिलौने अच्छे बनेंगे।'' सबने नदी के किनारे की मिट्टी खोदी। मिट्टी में से घास निकाली, मिट्टी इकट्ठी की। सबने मिलकर खिलौने बनाए।

शब्दार्थ

सलोने = सुंदर, मोल = मूल्य

सोंधी–सोंधी = सूखी मिट्टी पर पानी पड़ने से उठने वाली सुगंध

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ –

क. मिट्टी से क्या–क्या चीजें बनती हैं?

ख. खिलौने किन–किन चीजों से बनते हैं?

2. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और लिखो।

गाँव – .....। मिट्टी – .....।

सोंधी – .....। सुंदर – .....।

रंग–बिरंगे – .....। सलोने – .....।

3. पढ़ो और समझकर लिखो –

गाँव – पाँव, छाँव, ..., ... फूल – ..... ,.....

महकी – ..... ,..... खिलाती – ..... ,.....

गली – ..... ,.....

4. माटी लान के खेलवना बनावव , जइसे – चक्का, बेलना, लोटा , गिलास।

सूखाये के बाद ओला रंगाओ अउ अपन कक्षा मा सजावव।

5. खाल्हे लिखाय जघा मन मा लइका मन ला लेग के माटी एकट्ठा करवावव अउ ओखर अंतर के बारे मा गोठ–बात करव –

1. धान का खेत 2. मैदान 3. नदी किनारे

धान के खेत	मैदान	नँदिया तीर

4. मिट्टी लाकर खिलौने बनाओ, जैसे– चक्का, बेलन, लोटा, गिलास, आदि। सूख जाने पर उन्हें रँगो और अपनी कक्षा में सजाओ।

5. निम्नलिखित स्थानों पर बच्चों को ले जाकर वहाँ की मिट्टी एकत्र करवाएँ और उनके अंतर के बारे में चर्चा कराएँ–

1. धान का खेत 2. मैदान 3. नदी किनारे

धान का खेत	मैदान	नदी किनारे

35IAMP

पाठ 10

गजब होइस

चिखला , अस्कट , सुआ , अरज , चुप

बादर भाई
गजब होइस!
चिखला–चिखला
पानी–पानी,

सूरता सब ला
आ गे नानी।
जम्मो घर
दिन–रात चुहिस।

जावन कहाँ
कोन मेर खेलन ?
घर मा छेंकाय
अस्कट झेलन।
जइसे पिंजरा मा
चुप्पे सुआ।

सुरुज बबा
घाम उगावव।
सड़क के तरिया
नँदिया सुखावव,
तहुँमन भाई
करो अरज।

शिक्षण संकेत – लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहें। बरसात के मौसम और उस समय होने वाली परिवर्तनों पर चर्चा करें। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

पाठ 10

बहुत हुआ

35S6PC

कीचड़, बोरियत, सुआ, दुआ, मौन

बादल भइया
बहुत हुआ !
कीचड़–कीचड़
पानी पानी,

याद सभी को
आई नानी,
सारा घर
दिन रात चुआ।

जाएँ कहाँ !
कहाँ पर खेलें ?
घर में फँसे
बोरियत झेलें।
ज्यों पिंजरे में
मौन सुआ।

सूरज दादा
धूप खिलाएँ,
ताल नदी
सड़कों से जाएँ,
तुम भी भैया
करो दुआ !

शिक्षण संकेत – लयबद्ध कविता पाठ करें और बच्चों को दुहराने को कहें। बरसात के मौसम और उस समय होने वाली परिवर्तनों पर चर्चा करें। उनकी भाषा में कविता का अर्थ बताएँ एवं कठिन शब्दों के अर्थ से भी परिचित कराएँ।

शब्दार्थ

मौन	=	चुप	तोता	=	सुआ
ताल	=	तरिया	सूरज	=	सुरुज

अभ्यास

1. बरसात कहे मा तुँहर मन मा कोन–कोन से सब्द आथे ? सोचव अउ लिखव।

.....

.....

.....

2. जब अब्बड़ पानी गिरथे, तब तुमन कहाँ खेलथो ? कोन–कोन खेल ला खेलथो ?

.....

.....

.....

3. जब अब्बड़ पानी गिरथे त तुँहर घर के तिर हा कइसन दिखथे ?

4. बरसात मा अब्बड़ पानी गिरथे। ये सब पानी हा कहाँ–कहाँ जाथे ?

5. ये सब पानी ले बाँचे बर का करही? बतावव –

– लोगन / मनखे
– परेवा
– गेंगरवा
– कुकुर
– मछरी
– मंजूर

6. अब्बड़ होइस।

सियान मन अइसन कब कहिथे –

अब्बड़ होइस, अब चुप्पे बइठो।

क. जब हमन .....

ख. अब्बड़ होइस अब भीतरी चलव।

शब्दार्थ

मौन	=	शांत, चुप	सुआ	=	तोता
ताल	=	तालाब	सूरज	=	सूर्य

अभ्यास

1. बारिश कहने पर तुम्हारे मन में कौन–कौन से शब्द आते हैं? सोचो और लिखो।

.....

.....

.....

2. जब बहुत बारिश होने लगती है तब तुम कहाँ खेलते हो? कौन–कौन से खेल खेलते हो?

.....

.....

.....

3. जब खूब तेज़ बारिश होती है तो तुम्हारे घर के आसपास कैसा दिखाई देता है?

4. बारिश में खूब पानी बरसता है। यह सब पानी कहाँ–कहाँ जाता है?

5. ये सब बारिश से बचने के लिए क्या करेंगे? बताओ –

– लोग
– कबूतर
– केंचुआ
– कुत्ता
– मछली
– मोर

6. बहुत हुआ !

बड़े लोग ऐसा कब कहते हैं –

बहुत हुआ, अब चुपचाप बैठो !

क. जब हम .....

ख. बहुत हुआ, अब अंदर चलो !

जब हमन .....

ग. अब्बड़ होइस अब सुत जावव।
जब हमन .....

घ. अब्बड़ होइस अब टी.वी. बंद करव।
जब हमन .....

7. कविता ले

कविता मा अइसे काबर कहिस होही

क. अब्बड़ पानी होय मा सड़क नदिया बन जाथे।
ख. सबे कोती चिखला होए मा ममादाई के सुरता आथे।

8. अब नइ बरसो!

एक दिन बादर सोचिस मय अब कभू नइ बरसों।
जब मैं हा बरसथों त मनखे मोर चारी करथें।
जब में हा नइ बरसों तभो मोर चारी करथें।
आज ले बरसना एकदम बंद।
फेर का होए होही?
कहानी ला आघू बढ़ावव।

जब हम .....

ग. बहुत हुआ, अब सो जाओ!
जब हम .....

घ. बहुत हुआ, अब टी.वी. बंद करो!
जब हम .....

7. कविता से

कविता में ऐसा क्यों कहा गया होगा?

क. तेज़ बारिश होने पर सड़कें नदी बन जाती हैं।
ख. सब ओर कीचड़ होने पर नानी याद आती है।

8. अब नहीं बरसूँगा!

एक दिन बादल ने सोचा, मैं अब कभी नहीं बरसूँगा। जब मैं बरसता हूँ तब भी लोग मेरी बुराई करते हैं। जब नहीं बरसता हूँ तब भी मेरी बुराई करते हैं। आज से बरसना बिल्कुल बंद। फिर क्या हुआ होगा ? कहानी को आगे बढ़ाओ।

9. अपन अनुभव बतावव–

1. का तुमन बरसात के दिन मा कागद के डोंगा बनाके तऊँराय हवव? कागद के डोंगा बनावव।
2. बरसात के दिन मा पानी में भींजे ले कइसे लगथे ?
3. तुमन ला कोन मौसम सबले बने लागथे अउ काबर ?
4. बरसात के बारे मा अउ कविता खोज के कक्षा मा सुनावव।

9. अपने अनुभव बताओं –

1. क्या तुमने बारिश के दिनों में कागज की नाव बनाकर पानी में तैराई हैं। कागज की एक नाव बनाओं।
2. बारिश के दिनों में पानी में भीगना कैसा लगता है?
3. आपको सबसे अच्छा मौसम कौन–सा लगता है। और क्यों?
4. बारिश से संबंधित कविताएँ ढूँढकर कक्षा में सुनाओं?

पाठ 11

मड़ई–मेला

ककवा	चिल्लाना	मोहरी
मंगल	फुग्गा	मुसकुल

आज हमर गाँव मा मड़ई मेला हे। बुधिया सुकवारो अउ संगीता आज बिहनिया ले मेला मा जाये बर तियार हवयँ। चैतू , मंगल अउ समारू घलो तेल कंघी करके तियार हें। सबो लइका, खाना खा के मेला देखे बर निकल गिन।

ओमन मेला तिर पहुँचिन, तभे ओमन ला रहचुँली के आवाज सुनाई दे लागिस। लकर–लकर रेंग के सबोझन मेला में पहुँच गिन। सबो झन झूलना के तिर मा जा के जुरिया गें। जइसने झूलना रुकिस सबो लइका मन बइठे बर कूद दीन। बइठे के बाद झूलना सुरू होइस। लइकामन खुसी के मारे चिल्लाय लगिन। समारू हा अब्बड़ डर्रावत रहिस। ओहा अपन मुँहूँ लुका ले रहिस।

सब्बोझन झूलना झूलके आघू चल दीन। अतकेच मा दफड़ा, निशान अउ मोहरी बाजा के अवाज सुनाई दे लगिस। सब्बो कोती खुसी के मारे हल्ला होय लगिस – "मड़ई आ गे मंडई आ गे। "

सुग्घर रंग–बिरंगा कपड़ा अउ फूल–मालामन ले सजे राउतमन के झुण्ड दिखे लागिस। सब्बो झन बाजा के धुन मा नाचत आगू बढ़त रहिन।

राउतमन के मुखिया के हाथ मा मड़ई रहिस। राउत मन एला गाँव ले परघाके मेला मा लाने रहिन। मड़ई ला मेला मा गड़िया के मनखे मन ओकर पूजा करत रहिन। राउत मन के नाचा हा बाजा–गाजा संग चलत रहिस। अब मेला पूरा भरा गे रहिस।

पाठ 11

मड़ई–मेला

कंघी	चिल्लाना	मोहरी
मंगल	फुग्गा	मुश्किल

आज हमारे गाँव में मड़ई–मेला है। बुधिया, सुकवारो और संगीता आज सुबह से ही मेले में जाने के लिए तैयार हैं। चैतू, मंगल और समारू भी तेल, कंघी कर तैयार हैं। सभी बच्चे खाना खाकर मेला देखने चल पड़े।

वे मेले के करीब पहुँचे तभी उन्हें रहँचुली की आवाज सुनाई पड़ने लगी। जल्दी–जल्दी चलकर सब मेले में पहुँचे। सभी झूले के पास जाकर डट गए। जैसे ही झूला रुका सभी बच्चे बैठने के लिए कूद पड़े। बैठ जाने के बाद झूला शुरू हुआ। बच्चे खुशी से चिल्लाने लगे। समारू को बहुत डर लग रहा था। उसने अपना मुँह छुपा लिया था।

सभी झूला झूलकर वहाँ से आगे बढ़े। इतने में ही दफड़ा, निसान और मोहरी बाजे की आवाज सुनाई पड़ने लगी। सभी ओर खुशी का शोर उठा– "मड़ई आ गई, मड़ई आ गई।"

सुंदर रंग–बिरंगी पोशाकों और फूल–मालाओं से सजे राउत लोगों का समूह दिखाई पड़ा। सभी लोग बाजे की धुन पर नाचते हुए आगे बढ़ रहे थे।

राउतों के मुखिया के हाथ में मड़ई थी। राउत लोग इसे गाँव से परघाकर मेले में लेकर आ गए थे। मड़ई को मेले में गाड़कर लोग उसकी पूजा करते रहे। राउतों का नाच बाजे–गाजे के साथ चल रहा था। अब मेला पूरी तरह से भर चुका था।

मेला में किसम–किसम के दुकान रहिस। रंग–बिरंगा फुग्गा के मारे मेला में बहार आगे रहिस। लइकामन गुलगुला भजिया, मुर्रा, लाड़ू, करी लाड़ू बिसा के खावत–खावत घूमत रहिन। सुकवारो हा जलेबी खाईस। समारू हा बड़ेजान कुसियार बिसा के लाईस। कुसियार ला कुटका–कुटका करके सबझन कुसियार ला चुहकत रहिन।

सब्बो लइका खेलौना के दुकान मा पहुँच गिन। सुकवारो हा जिहाज, संगीता हा पुतरी अउ बुधिया हा रेलगाड़ी बिसाइस। चैतू हा मंजूर, मंगल हा कार अउ समारू हा एकठन बड़ेजान बॉल लिस। सब्बो लइकामन घूम–घूम के सामान बिसावत रहिन। आखरी में सबोझन किसिम–किसिम के फुग्गा बिसाइन। सब लइकामन एक जघा सकलाय के बाद वापिस घर जाय डहर चल परिन। वो मन बहुत खुस लगत रहिन।

शिक्षण संकेत :– संयुक्त वर्ण वाला शब्द के अउ लिखावट के अभ्यास करावत। मुसकुल शब्दमन के अर्थ ओखर भाषा में बतावत। प्रश्नमन के अभ्यास जिहां के तिहां सीस म करावव। लइकामन ल उतार–चढ़ाव के संग पढ़े बर सिखावव।

शब्दार्थ

तीर	=	करीब	पोशाक	=	पहिरे के कपड़ा
लाडू	=	लड्डू	एकत्र	=	एक जघा जमा होना
रहचुली	=	एक प्रकार के झूला			
परघाके	=	स्वागत करके			
दफड़ा	=	ढप या ढपली के जैइसन एक बाजा			
निसान	=	एक प्रकार के बाजा			
मोहरी बाजा	=	शहनाई के जैइसन बाजा			

मेले में तरह–तरह की दुकानें थीं। रंगीन फुग्गों से मेले में बहार आ गई थी। बच्चों ने गुलगुला, भजिया, मुर्रा लाडू, करी लड्डू खरीदे और खाते हुए घूमते रहे। सुकवारो ने जलेबी खाई। समारू एक बड़ा–सा गन्ना खरीद लाया। गन्ने के टुकड़े बनाकर सभी गन्ना चूसते रहे।

सभी बच्चे खिलौने की दुकान पर पहुँच गए। सुकवारो ने जहाज़, संगीता ने गुड़िया और बुधिया ने रेल खरीदी। चैतू ने मोर, मंगल ने कार और समारू ने एक बड़ी गेंद ली। सब बच्चे घूम–घूमकर सामान खरीदते रहे। अंत में सभी ने तरह–तरह के फुग्गे खरीदे। सभी बच्चे एकत्र हो जाने के बाद वापस घर की ओर चल पड़े। वे बहुत खुश लग रहे थे।

शिक्षण संकेत :– संयुक्त वर्ण वाले शब्दों के उच्चारण एवं लेखन का अभ्यास करवाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ। प्रश्नों के अभ्यास यथास्थान पेंसिल से करवाएँ। बच्चों को आरोह–अवरोह के साथ पढ़ना सिखाएँ।

शब्दार्थ

करीब	=	पास	पोशाक	=	पहनने के कपड़े
लाडू	=	लड्डू	एकत्र	=	इकट्ठे

रहचुली = एक प्रकार का झूला

परघाकर = पूजा कर, स्वागत करके

दफड़ा = ढप या ढपली की तरह का एक बाजा

निसान = एक प्रकार का बाजा

मोहरी बाजा = पिपिहरी, शहनाई की तरह का बाजा

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय सब्द मन के अर्थ अपन भाषा मा बतावव –

करीब , पोशाक , एकत्र , मुश्किल , रहचुँली

2. खाल्हे लिखाय प्रश्न मन के उत्तर बतावव –

(क) रहचुँली काला कइथे ?

(ख) राउतमन के मुखिया के हाथ मा का रहिस ?

(ग) मेला मा सबझन काखर पूजा करत रहिन ?

(घ) राउतमन के कपड़ा कइसे रहिस ?

(ङ) लइकामन मेला मा काय–काय खइन ?

3. खाल्हे मा लिखाय जिनिस मन कोन रंग के रइथे ? लिखव –

(क) पाका पताल	–	लाल
(ख) श्यामपट्ट	–	.....
(ग) लीम के पाना	–	.....
(घ) मुरई	–	.....
(ङ) सूरजमुखी के फूल	–	.....

4. खेलौना के ये दुकान ले तुमन काय–काय बिसाहू ?

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

करीब, पोशाक, एकत्र, मुश्किल, रहँचुली

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ –

क. रहँचुली किसे कहते हैं ?

ख. राउतों के मुखिया के हाथ में क्या था ?

ग. मेले में लोग किसकी पूजा कर रहे थे ?

घ. राउत लोगों की पोशाक कैसी थी ?

ड. बच्चों ने मेले में क्या–क्या खाया ?

3. निम्नलिखित चीजें किस रंग की होती हैं ? लिखो –

क. पका टमाटर लाल

ख. श्यामपट .....

ग. नीम के पत्ते .....

घ. मूली .....

ङ सूरजमुखी का फूल .....

4. खिलौने की इस दुकान से तुम क्या – क्या खरीदोगे –

_____

_____

5. तुमन मड़ई मेला मा का–का देखेव ? लिखव

_____

_____

6. तुहर गाँव मा मड़ई मेला कब भराथे ? ओमा तुमन का–का करथो

_____

_____

7. सब्द मन के रेल –

8. " में " या " तैं " लगाके वाक्य ला पूरा करव –

(क) ..... रायपुर जावत हों ।

(ख) ..... नहावत हस ।

(ग) ..... पढ़त हव।

(घ) ..... रायपुर जावव।

(ड) ..... कहाँ जावत हस ?

9. तैं मेला मा जातेस त काय–काय बिसातेस ?

10. गतिविधि :–

1. पुट्ठा, कागज अउ माचिस के खाली खोखा ले रहँचुली बनावव।
2. अपन गाँव या शहर के मेला के फोटू कॉपी मा बनावव।
3. मड़ई, मेला मा घुमे के अपन अनुभव ला सुनावत।

_____

_____

5. तुमने मड़ई–मेले में क्या–क्या देखा ? लिखो –

_____

_____

5. तुम्हारे गाँव में मड़ई–मेला कब लगता है ? उसमें तुम क्या – क्या करते हो –

_____

_____

6. शब्दों की रेल –

7. 'मैं' या 'तुम' लगाकर वाक्य पूरे करो –

क. ——— रायपुर जा रहा हूँ।
ख. ——— नहा रहे हो।
ग. ——— पढ़ रहा हूँ।
घ. ——— रायपुर जाओ।
ङ ——— कहाँ जा रहे हो?

8. तुम मेले में जाते तो क्या–क्या खरीदते ?

9. गतिविधि :–

1. गत्ते, कागज और माचिस की खाली डिबियों से रहँचुली बनाओ।
2. अपने गाँव/शहर के मेले का चित्र कापी में बनाओ।
3. मड़ई/मेले का भ्रमण कर अपना अनुभव सुनाओ।

36JTUA

पाठ 12

ऊँट चलय

ऊँट	बोझा	फसही
ऊँच	घेंच	करवट

ऊँट चलिस भई, ऊँट चलिस
हालत–डोलत ऊँट चलिस।
अतका ऊँच ऊँट चलिस
ऊँट चलिस भई ऊँट चलिस।
ऊँच हे गरदन ऊँच हे पीठ
पीठ उठाए ऊँट चलिस।
रेती हे त होवन दव,
बोझा ऊँट ला बोहन दव।

नइ फँसे ओहा रेती मा
रेती मा घलो ऊँट चलिस।
जब थक के बइठही ऊँट,
कोन करवटी बइठही ऊँट।
बता सकथे कोन भला ?
ऊँट चलिस भई, ऊँट चलिस।

शिक्षण संकेत – कविता को लयपूर्वक गाएँ और बच्चों को दुहराने को बोलें। अपरिचित शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ। चंद्रबिंदु वाले शब्दों का उच्चारण करना सिखाएँ।

पाठ 12

ऊँट चला

ऊँट	बोझ	फँसेगा
ऊँचा	गर्दन	करवट

ऊँट चला भई, ऊँट चला
हिलता–डुलता ऊँट चला।

इतना ऊँचा ऊँट चला
ऊँट चला भई, ऊँट चला।

ऊँची गर्दन, ऊँची पीठ,
पीठ उठाए, ऊँट चला।

बालू है तो होने दो,
बोझ ऊँट को ढोने दो।

नहीं फँसेगा बालू में,
बालू में भी ऊँट चला।

जब थककर बैठेगा ऊँट,
किस करवट बैठेगा ऊँट?

बता सकेगा कौन भला?
ऊँट चला भई, ऊँट चला।

शिक्षण संकेत – कविता को लयपूर्वक गाएँ और बच्चों को दुहराने को बोलें। अपरिचित शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ। चंद्रबिंदु वाले शब्दों का उच्चारण करना सिखाएँ।

शब्दार्थ

भई – भाई बालू – रेती

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय सब्द मन के अर्थ अपन भाषा मा बतावव –

गर्दन, करवट, ऊँचा

2. खाल्हे लिखाय प्रश्न मन के उत्तर बतावव –

(क) ऊँट के गरदन कइसे होथे ?

(ख) लंबा टांग वाला अउ जानवर कोन–कोन हवै ?

(ग) ऊँट कोने किसम के भुईयाँ मा रेंग सकथे ?

(घ) ऊँट के पीठ के बनावट कइसे होथे ?

(ङ) ऊँट का काम आथे ?

(च) सवारी के काम में अवइय्या जानवर मन के नाम बतावव।

(छ) तुँहरमन घर ऊँट रइतिस त तुमन ओखर ले का–का काम लेतेव ?

3. ऊँट ले ऊँच अउ छोटे जिनिस अउ जीव मन के नाम लिखव –

ऊँच	छोटे
रूख	खरहा
_____	_____
_____	_____

4. चंद्रबिन्दु वाले अउ बिन चंद्रबिन्दु वाले सब्दमन ला छाँट के अलग–अलग के लिखव–

पुँछी, फूल, ऊन, झूठ, ऊँच, ठँठ, खूँठ, छूट, धूप, ऊँट, आँसू।

चंद्रबिन्दु वाले सब्द	बिना चंद्रबिन्दु वाले सब्द
_____, _____	_____, _____
_____, _____	_____, _____
_____, _____	_____, _____

शब्दार्थ

भई – भाई

बालू – रेत

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

गर्दन, करवट, ऊँचा

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताओ –

क. ऊँट की गर्दन कैसी होती है?

ख. लंबी टाँगों वाले अन्य जानवर कौन–कौन–से हैं?

ग. ऊँट किस तरह की भूमि में भी चल सकता है?

घ. ऊँट की पीठ की बनावट कैसी होती है?

ड. ऊँट किस काम आता है?

च. सवारी के काम आने वाले जानवरों के नाम बताओ।

छ. यदि तुम्हारे घर ऊँट होता तो उससे तुम क्या–क्या काम लेते?

3. ऊँट से ऊँचे व छोटे चीजों तथा जीवों के नाम लिखो –

ऊँचे	छोटे
पेड़	खरगोश
_____	_____
_____	_____

4. चंद्रबिंदु वाले तथा बिना चंद्रबिंदु वाले शब्दों को छाँटकर अलग–अलग लिखो।

पूँछ, फूल, ऊन, झूठ, ऊँच, ठूँठ, खूँट, छूट, धूप, ऊँट, आँसू।

चंद्रबिंदु वाले शब्द	बिना चंद्रबिंदु वाले शब्द
_____, _____	_____, _____
_____, _____	_____, _____
_____, _____	_____, _____

5. गतिविधि :–

1. ऊँट के फोटू ला पत्रिका मन ले काट के ओला अपन पोर्टफोलियो में लगावव अउ ऊँट के फोटू बनावव –

2. अपन बड़ेमन या गुरु जी ले पूछ के ऊँट के दू ठन अइसन बिसेसता बतावव जेहा ओला अउ दूसर जानवर मन ले अलगियाथे।

6. झटकुन कविता ला पढ़के मजा लौ।

कुछु ऊँट ऊँच

कुछु पूँछी ऊँच

कुछु ऊँच ऊँट के

पीठ ऊँच

ऊँट सब्द ला लकर–लकर बोलके देखव।

जीभ ह लड़बड़ा गे न !

कइसे लागिस कविता ? अब ये कविता के कुछु नाव रखव।

दिए जगा मा ओला लिखव ।

5. गतिविधि :–

1. ऊँट का चित्र पत्र – पत्रिकाओं से काटकर अलग करो और उसे अपने पोर्टफोलियो में लगाओ तथा ऊँट का चित्र बनाओ –

2. अपने बड़ों से या गुरुजी से पूछकर ऊँट की दो ऐसी विशेषताएँ बताओ जो उसे अन्य किसी भी जानवर से अलग करती हैं।

6. झटपट कविता पढ़कर मजा लो ।

कुछ ऊँट ऊँचा

कुछ पूँछ ऊँची

कुछ ऊँचे ऊँट की

पीठ ऊँची

''ऊँट'' शब्द जल्दी–जल्दी बोलकर देखो ।

जीभ लड़खड़ा गई न !

कैसी लगी कविता ? अब इस कविता को कोई नाम दो ।

ऊपर दी गई जगह में उसे लिखो।

7. बतावव एमन ला तुँहर भाखा मा का कहिथें ? पहिचान के नाम लिखव –

.....

.....

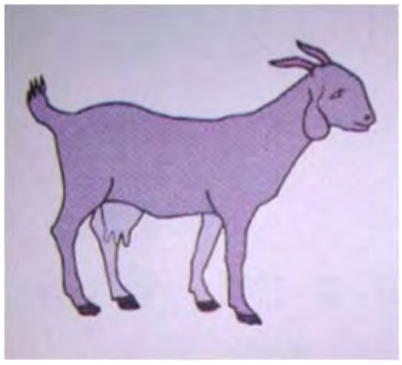

.....

.....

.....

.....

7. बताओं इन्हें तुम्हारी भाषा में क्या कहते है पहचान कर नाम लिखो–

.....

.....

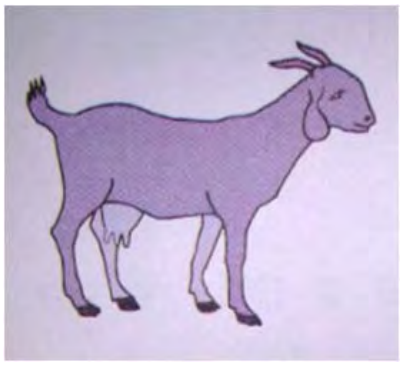

.....

.....

.....

.....

373KXK

पाठ 13

आईस एकठन खबर

दिल्ली	भीतर	मंगसा	माछी
बेंदरा	आँसू	फांफा	समुन्दर

अभी खबर दिल्ली ले आईस,
माछी रानी ओला लाईस।
फांफा हा हाथी ला मारिस,
हाथी बपुरा का करतिस ?

खुसर के बइठगे मरकी अंदर,
मरकी मा रहिन अढई बंदर।
देखके ओला हाथी रोईस,
रोवत–रोवत ओहा सोईस।

37CGZ8

पाठ 13

आई एक खबर

दिल्ली	अंदर	मच्छर	मक्खी
बंदर	आँसू	टिड्डे	समंदर

अभी खबर दिल्ली से आई,
मक्खी रानी उसको लाई।
टिड्डे ने हाथी को मारा,
हाथी क्या करता बेचारा?

घुस बैठा मटके के अंदर,
मटके में थे ढाई बंदर।
उन्हें देखकर हाथी रोया,
रोते–रोते फिर वह सोया।

रूकिस नई आँसू के धारा,
मरकी बनगे समुन्दर खारा।
बुड़े लागिन हाथी, बंदर
फँसे रहिन हे ओखरे अंदर।

रोना सुनके आईस मंगसा,
लात जमाईस कसके ओहा।
मरकी फुटगे, समुंद बोहागे,
हाथी, बेंदरा बाहिर आगे।

शिक्षण संकेत :– कविता का उचित लय के साथ पाठ करें और बच्चों से दुहराने के लिए कहें। संयुक्ताक्षर वाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ। पाठ के बाद अनुस्वार – तथा आधे 'न' (न्) को आपस में बदलकर शब्द लिखवाएँ। जैसे – 'अन्दर से अंदर'। चित्रों का उपयोग करें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

रुकी नहीं आँसू की धारा,
मटका बना समंदर खारा।
लगे डूबने हाथी बंदर,
फँसे हुए थे उसके अंदर।

रोना सुनकर आया मच्छर,
लात जमाई उसने कसकर।
मटका फूटा बहा समंदर,
निकल पड़े सब हाथी, बंदर।

शिक्षण संकेत :– कविता का उचित लय के साथ पाठ करें और बच्चों से दुहराने के लिए कहें। संयुक्ताक्षर वाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ। पाठ के बाद अनुस्वार – तथा आधे 'न' (न्) को आपस में बदलकर शब्द लिखवाएँ। जैसे – 'अन्दर से अंदर'। चित्रों का उपयोग करें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

खबर = समाचार / संदेशा समंदर = समुंद

ढाई = अढ़ई (दू अउ आधा)

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव।

खबर, समंदर, ढाई, अंदर,

2. खाल्हे लिखाय प्रश्न मन के उत्तर देवव –

क. मरकी कतका बड़ रहिस होही?

ख. अढ़ई बेंदरा कइसे होइन होहीं?

ग. मरकी कइसे फुटिस ?

3. वाक्य मा परयोग करव– मरकी, बेंदरा

4. उदाहरण देखव। अइसने कुछु अउ सब्द लिखव।

उदाहरण– धारा चारा खारा

भीतरी ————————, ————————, ————————

गोड़ ————————, ————————, ————————

5. तीन ठन वर्ण वाले सब्द मन के बीच के वर्ण ला बदल–बदल के नवा, नवा सब्द बनावव अउ लिखव, जइसे–जमाई।

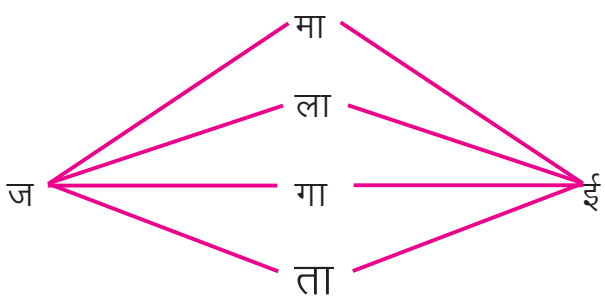

————————

————————

————————

————————

शब्दार्थ

खबर = समाचार

समंदर = सागर, समुद्र

ढाई = दो और आधा मिलाकर बनी संख्या

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा/बोली में बताओ –

खबर, समंदर, ढाई, अंदर,

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो –

क. मटका कितना बड़ा रहा होगा ?

ख. ढाई बंदर कैसे हुए होंगे ?

ग. मटका कैसे फूटा ?

3. वाक्यों में प्रयोग करो – मटका, बंदर

4. उदाहरण देखो। ऐसे कुछ और शब्द लिखो।

उदाहरण– धारा चारा खारा

अंदर ——————, ——————, ——————

लात ——————, ——————, ——————

5. तीन अक्षर वाले शब्दों के बीच के अक्षरों को बदल–बदलकर नए–नए शब्द बनाओ और लिखो, जैसे– जमाई।

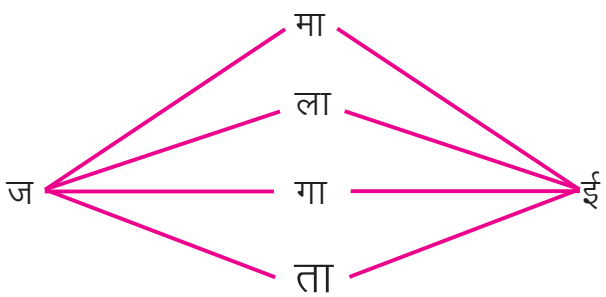

——————

——————

——————

——————

6. कविता मा आय संयुक्त अक्षर वाले सब्द मन जइसे अउ सब्द लिखव।

जइसे– सब्बो, ————————।, ————————।,

————————।, ————————।,

7. गतिविधि :–

1. बेंदरा ले जुड़े कहानी खोजव अउ कक्षा मा नाटक करव।
2. तुमन ला खबर कहाँ–कहाँ ले मिलथे ?
3. अपन गाँव में होय कोनो घटना के खबर ला सुनावव।
4. गुरूजी कक्षा मा **"आज की बात"** गतिविधि करवायँ।

6. कविता में आए संयुक्ताक्षर वाले शब्दों को छाँटकर लिखो।

जैसे– मक्खी, ————————।, ————————।,

————————।, ————————।,

7. गतिविधि :–

1. बंदर से संबंधित कहानी ढूँढ़ो और कक्षा में अभिनय करो ।
2. तुम्हें खबरें कहाँ–कहाँ से मिलती हैं ।
3. अपने गाँव में हुई किसी घटना की खबर सुनाओ ।
4. शिक्षक कक्षा में **"आज की बात"** गतिविधि करवाएँ ।

37LD1V

पाठ 14

मुसवा ला मिलिस सीस

सीस	खोजना	अखरी	अलकरहा

एक घाँव एकठन मुसवा हा खाय बर कुछु खोजत रहिस।

1

ओला एकठन सीस मिलिस। मुसवा हा ओला धरके उलटा–पुलटा करके देखे लागिस।

2

"मोला छोड़ दे, मोला जान दे" सीस हा मुसवा ला गिड़गिड़ा के बोलिस, मैं हा तोर काय काम के हौं लकड़ी के कुटका त आंव। खाय मा घलो मेहर बने नई लाँगव।

3

"मैं हा तोला कुतरहूँ।" मुसवा ह कहिस।

"मोला अपन दाँत ला चोक्खी अउ छोटे राखेबर हरदम कुछु–न–कुछु कुतरे बर परथे।" अउ मुसवा हा सीस ला कुतरे लागिस।

उई! मोला पिरावत हे। तैं हा मोला एक आखरी फोटू बनावन दें, तहाँ ले तैं जो चाहबे कर लेबे।

4

"बने हे" मुसवा बोलिस। तेहाँ फोटू बना ले। फेर मैं तोला चबाके कुटी–कुटी कर दूहूँ।

पाठ 14

चूहे को मिली पेंसिल

37V93I

पेंसिल	ढूँढ़	आखिरी	अजीब

एक बार एक चूहा खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा था।

1

उसे एक पेंसिल मिली। चूहा पेंसिल लेकर उसे उलट–पलट कर देखने लगा।

2

''मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो'' ,पेंसिल चूहे से गिड़गिड़ाकर बोली, ''मैं तुम्हारे किस काम की हूँ, लकड़ी का टुकड़ा हूँ। खाने में भी अच्छी नहीं लगूँगी।''

3

''मैं तुम्हें कुतरूँगा,'' चूहे ने कहा।

''मुझे अपने दाँत पैने और छोटे रखने के लिए हमेशा कुछ–न–कुछ कुतरना पड़ता है।'' और चूहे ने पेंसिल कुतरना शुरू कर दिया।

''उई! मुझे दर्द हो रहा है। तुम मुझे आखिरी चित्र बना लेने दो, फिर तुम चाहे जो करना।''

4

''ठीक है,'' चूहे ने कहा। ''तुम चित्र बना लो; फिर मैं चबाकर तुम्हारे टुकड़े–टुकड़े कर दूँगा।''

सीस के जीव मा जीव आईस। तहाँले ओ हा बड़े जान गोला बना दिस।

5

'' एहा का पनीर के टुकड़ा आय?'' मुसवा ह पूछिस।

'' हौ, हमन एला पनीर कहिबों'' सीस हा बोलिस।

(6)

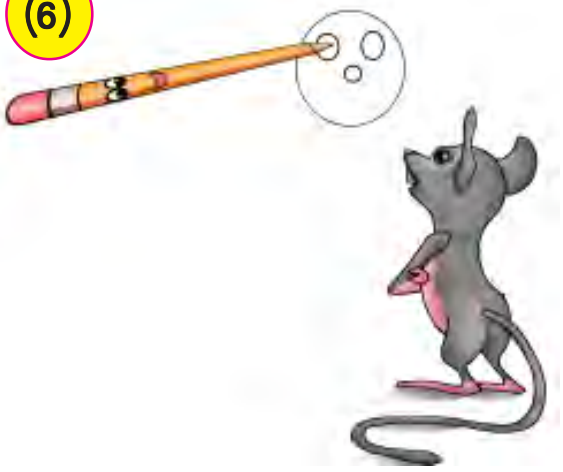

फेर सीस हा ओ बड़े गोला भीतरी तीन ठन अउ छोटे–छोटे गोला बना दिस।

'' हौ, अब तो एहा पनीर लागत हे।'' मुसवा हा बोलिस। ''ऐमा त छेदा दिखत हे''

7

''चलव हमन येला पनीर मा छेदा बोलबोन।'' सीस हा मान लिस अउ ओ बड़े गोला के खाल्हे मा एकठन अउ बड़े गोला बनाईस।

''अरे, ए हा तो सेवफल आय'' मुसवा खुस होगे। ''हौ, येला सेवफल कहि लेथन।'' सीस बोलिस।

8

सीस फेर दूसर बड़े गोला के तिर मा कुछु अजब फोटू बनाय लागिस।

पेंसिल ने ठंडी साँस ली। फिर उसने एक बड़ा–सा गोला बना दिया।

5

''यह क्या पनीर का टुकड़ा है?'' चूहे ने पूछा।

''हाँ, हम इसे पनीर ही कहेंगे'' पेंसिल ने कहा।

(6)

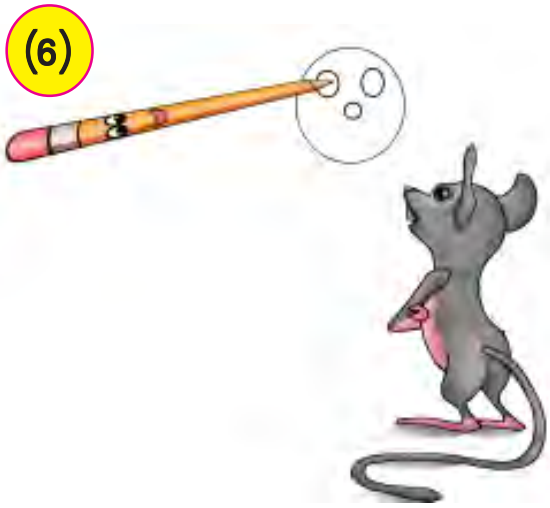

फिर पेंसिल ने बड़े गोले के अंदर तीन छोटे गोले बना दिए।

''हाँ, अब यह पनीर ही लग रहा है।'' चूहे ने कहा। ''इसमें तो छेद नजर आ रहे हैं।''

7

''चलो, हम इन्हें पनीर में छेद बोलेंगे।'' पेंसिल ने मान लिया और उसने बड़े गोले के नीचे एक और बड़ा गोला बनाया।

''अरे, यह तो सेब है,'' चूहा चहका। ''हाँ, इसे सेब कह लेते हैं,'' पेंसिल ने कहा।

8

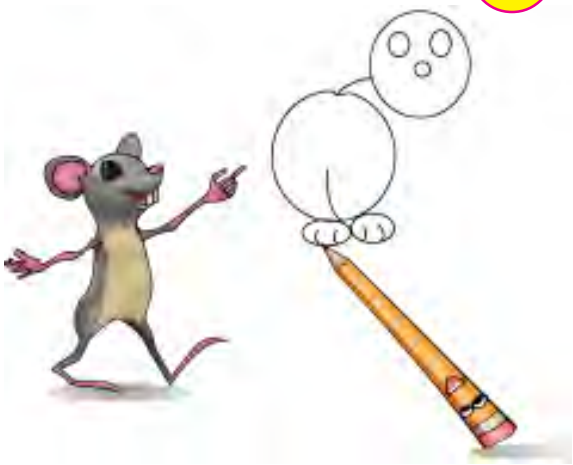

पेंसिल फिर दूसरे बड़े गोले के पास कुछ अजीब–से चित्र बनाने लगी।

"अरे वाह! अब तो मंजा आ गे। येहा तो चमचम आय।"

9

मुसवा के मुँहूँ में पानी आय लागिस। "जल्दी कर! मोला खाना हे।"

सीस हा उप्पर वाला गोला के ऊपर मा दू ठन नानकुन तिकोना बना दिस।

10

"अरे, अरे " मुसवा चिल्लईस। " अब तो तेंहा ओला बिलई असन बनाय लगेस। अउ आगू मत बना।"

फेर सीस हा बनाते गिस। ओहा उप्पर के गोला मा लाम–लाम मेंछा अउ मुँहूँ बनाईस।

11

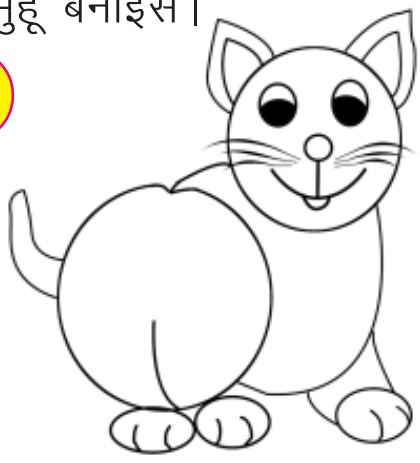

मुसवा डर्रा के चिल्लईस। "अरे ददा रे! येहा तो एकदम असली बिलई कस दिखत हे। बचावव।"

अइसे कहिके ओहा भागके अपन बिला मा खुसर गे।

12

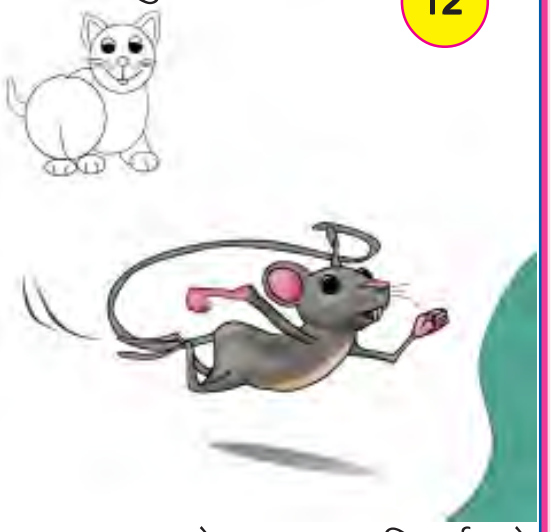

का तुमन घलो एकठन बिलई के अइसने फोटू बना सकत हँव, जेला देखके मुसवा डर्रा जाय?

"अरे, वाह! अब तो मजा ही आ गया। यह तो चमचम है।"

9

चूहे के मुँह में पानी आने लगा। "जल्दी करो! मुझे खाना है।"

पेंसिल ने ऊपरवाले गोले के ऊपर दो छोटे तिकोन बना दिए।

10

"अरे, अरे" चूहा चीखा। "अब तो तुम उसे बिल्ली की तरह बनाने लगीं। और आगे मत बनाओ।"

लेकिन पेंसिल बनाती गई। उसने ऊपर के गोले पर लम्बी–लम्बी मूँछें और मुँह बनाया।

11

चूहा डरकर चिल्लाया, "अरे, बाप रे! यह तो बिल्कुल असली बिल्ली लग रही है। बचाओ।"

ऐसा कहकर वह भागकर अपने बिल के अंदर घुस गया।

12

क्या तुम भी एक बिल्ली का ऐसा चित्र बना सकते हो, जिसे देखकर चूहा डर जाए?

शिक्षण संकेत :– चित्र–कथा को बच्चों को समूह में पढ़ने दें। बच्चों से चूहे–बिल्ली की आदतों पर चर्चा करवाएँ। मिकी माउस के बारे में बच्चों को जानकारी दें/लें, उसका चित्र प्रदर्शित करें। घरेलू, पालतू–पशुओं और जीवों के नाम लिखवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

गिड़गिड़ाना	=	विनती करना	तिकोन	=	तीन कोनेवाला
ठंडी साँस लेना	=	राहत पाना	भाग के	=	दौड़कर
आखिरी	=	अंतिम	चोक्खा	=	नुकीले, धारदार
अलकरहा	=	विचित्र	दरद	=	पीड़ा
कुतरना	=	दाँत से काटना			
पनीर	=	दूध फाड़कर बनाया गया एक पदार्थ			

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

कुतरना , अजीब , नुकीला , दर्द, पनीर

2. ए प्रश्नमन के उत्तर बतावव –

क. मुसवा हा सीस ला काबर कुतरना चाहत रहिस ?

ख. बड़े–जान गोला हा मुसवा ला कइसे दिखत रहिस ?

ग. चमचम का होथे ?

घ. सीस हा काबर फोटो बनाईस ?

ङ. फोटू ला देखके मुसवा हा का करिस ?

3. मुसवा या बिलई वाला कोनो कविता याद होही त सुनावव।

4. सही सब्द ला छाँट के खाली जघहा मा भरव –

(कुतरे बर , भागके , चिल्लईस , आखरी , तीन ठन)

क. मुसवा ..... दूसर बिला मा घुसरगे।

ख. मुसवा हा सीस ला ..... चालू कर दिस।

शिक्षण संकेत :– चित्र–कथा को बच्चों को समूह में पढ़ने दें। बच्चों से चूहे–बिल्ली की आदतों पर चर्चा करवाएँ। मिकी माउस के बारे में बच्चों को जानकारी दें/लें, उसका चित्र प्रदर्शित करें। घरेलू, पालतू–पशुओं और जीवों के नाम लिखवाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

गिड़गिड़ाना	=	विनती करना	तिकोन	=	तीन कोनेवाला
ठंडी साँस लेना	=	राहत पाना	भागकर	=	दौड़कर
आखिरी	=	अंतिम	पैने	=	नुकीले, धारदार
अजीब	=	विचित्र	दर्द	=	पीड़ा
कुतरना	=	दाँत से काटना			
पनीर	=	दूध फाड़कर बनाया गया एक पदार्थ			
चमचम	=	दूध या छेने से बनी मिठाई			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

कुतरना, अजीब, पैने, दर्द, पनीर

2. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ –

क. चूहा पेंसिल क्यों कुतरना चाहता था?

ख. बड़ा–सा गोला चूहे को कैसा दिखाई पड़ा?

ग. चमचम क्या होता है?

घ. पेंसिल ने किसका चित्र बनाया?

ङ चित्र देखकर चूहे ने क्या किया?

3. चूहे अथवा बिल्ली पर कोई कविता याद हो तो सुनाओ।

4. सही शब्द छाँटकर खाली स्थान भरो –

(कुतरना, भागकर, चिल्लाया, आखिरी, तीन)

क. चूहा ———————————— दूसरे बिल में घुस गया।

ख. चूहे ने पेंसिल ———————————— शुरू कर दिया।

ग. सीस हा कहिस – ''मोला एक ठन ..... फोटू बनावन दे।''

घ. फेर सीस हा बड़े गोला के भीतरी ..... नानकुन गोला बना दिस।

ङ. मुसवा डर्रा के ..... '' अरे ददा रे! ''

5. सब्द के खेल।

ता ज म ह ल

उप्पर मा लिखाय ताजमहल सब्द के वर्णमन ले कुछु नवा सब्द बने हे, जइसे – ताज, महल, लता, ताल, मल

अइसने खाल्हे मा लिखाय सब्द मन ले तुमन घलो कुछु नवा सब्द बनावव –

क म ल क क ड़ी

6.पढ़व अउ समझव।

क.	बिल्ला	–	बिलई				
	घोड़ा	–	घोड़ी		भईसा	–	भईसी
	बोकरा	–	बोकरी		गरवा	–	बइला

7. रंग–बिरंगा कागज ला चीर के मुसवा के फोटू मा चटकावव।

ग. पेंसिल ने कहा,– "मुझे एक ———————— चित्र बना लेने दो।''

घ. फिर पेंसिल ने बड़े गोले के अंदर ———————— छोटे गोले बना दिए।

ङ. चूहा डरकर ————————————————, "अरे बाप रे!"

5. शब्दों का खेल।

ता ज म ह ल

ऊपर दिए गए ताजमहल शब्द के वर्णों से कुछ नये शब्द बने हैं जैसे –

ताज, महल, लता, हल, ताल, मल

इसी तरह नीचे लिखे शब्द में से तुम भी कुछ शब्द बनाओं –

क म ल क क ड़ी

6. पढ़ो और समझो।

क.	बिल्ला	–	बिल्ली	चूहा	–	चुहिया
	घोड़ा	–	घोड़ी	भैंसा	–	भैंस
	बकरा	–	बकरी	गाय	–	बैल

ख.	मेरा	मेरी	मेरे
	हमारा	हमारी	हमारे
	तुम्हारा	तुम्हारी	तुम्हारे

7. रंग – बिरंगे कागज के टुकड़े करके चूहे के चित्र में चिपकाओ।

385556

पाठ 15

घाम

कन , पहाड़ , अँगना , चिरई , पाना , पाँख

बीतिस रतिहा होईस अंजोर
घर अँगना मा उतरिस घाम।
कन–कन मा पाना–पाना मा
हाँसत,गावत,बगरिस धाम।
पहाड़ के टिप्प मा उछलिस
झरना के संग खेलिस घाम।
सागर के लहरा मा नाचिस
सबके बनगे संगी घाम।

चिरई के पाँखी मा चमकिस
फूल उप्पर लहराईस घाम।

भुइयाँ के कोन्टा–कोन्टा मा
रूप ला अपन देखाईस घाम।

शिक्षण संकेत :– शिक्षक कविता का वाचन सस्वर, उचित यति–गति, लय तथा हाव–भाव के साथ करें और बच्चों से दुहराने को कहें। सूरज के साथ प्राकृतिक दृश्यों वाले चित्र का उपयोग कर पाठ को पढ़ाएँ। कठिन शब्दों को पूछकर बच्चों से ही उनके अर्थ निकालवाने का प्रयास करें। यथा अनुसार विलोम शब्द, वाक्य प्रयोग इत्यादि द्वारा उनकी सहायता भी करें। पाठ के अनुकरण वाचन की आवृति 4–5 बार हो। शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

बीतिस = पहाइस चिरई = चिड़िया। संगी = संगवारी
पहाड़ = पर्वत कण = बहुत छोटा टुकड़ा

38E16T

पाठ 15

धूप

कण	पर्वत	आँगन	पंछी	पत्ते	पंख

बीती रात हुआ उजियारा
घर–आँगन में उतरी धूप।
कण–कण में, पत्ते–पत्ते पर
हँसती–गाती बिखरी धूप।
पर्वत की चोटी पर उछली
झरनों के सँग खेली धूप।
सागर की लहरों पर नाची
सबकी बनी सहेली धूप।

पंछी के पंखों पर चमकी
फूलों पर लहराई धूप।
धरती के कोने–कोने तक
देने लगी दिखाई धूप।

शिक्षण संकेत :– शिक्षक कविता का वाचन सस्वर, उचित यति–गति, लय तथा हाव–भाव के साथ करें और बच्चों से दुहराने को कहें। सूरज के साथ प्राकृतिक दृश्यों वाले चित्र का उपयोग कर पाठ को पढ़ाएँ। कठिन शब्दों को पूछकर बच्चों से ही उनके अर्थ निकालवाने का प्रयास करें। यथा अनुसार विलोम शब्द, वाक्य प्रयोग इत्यादि द्वारा उनकी सहायता भी करें। पाठ के अनुकरण वाचन की आवृति 4–5 बार हो। शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

बीती = समाप्त हुई। पंछी = चिड़िया। सहेली = सखी, मित्र।
पर्वत = पहाड़। कण = बहुत छोटा टुकड़ा

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के अर्थ अपन भाखा मा बतावव –

पक्षी, सहेली, पर्वत

2. ये प्रश्नमन के उत्तर अपन भाखा मा लिखव –

क. रतिहा पहाय के बाद का होइस ?

ख. पहाड़ी के टीप ले का उछलिस ?

ग. चिरई के पाँख कइसे चमकय ?

घ. कोन हा सबझन के संगवारी बनगे ?

3. कविता के लाइन ला पूरा करव –

क. पहाईस रतिहा होईस ——————————————

ख. झरना के संग मा ——————————————

ग. —————————— के लहरा मा नाचिस।

घ. भुइयाँ के कोन्टा–कोन्टा मा ——————————

4. पाठ मा आए जोड़ी वाला सब्द छाँट के लिखव, जइसे – घर–अँगना

—————————— ——————————

—————————— ——————————

5. उलटा मतलब वाला सब्दमन ला धियान ले पढ़व –

बिहनिया	–	संझा	उतरिस	–	चढ़िस
नवा	–	जुन्ना	आईस	–	गिस
घाम	–	छइहाँ	हँसना	–	रोना

6. का , की , के , ला मिंझार के सब्द बनावव अउ पढ़व –

	का	की	के	को
उस	उसका	उसकी	————	————
किस	————	————	————	————
सब	————	————	————	————

गतिविधि :–

1. सुरुज, चिरई , फूल के फोटू बनावव।

2. बिहनिया, संझा, नदी, पहाड़ के फोटू बना के अपन पोर्टफोलियो मा लगावव।

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

पंछी, सहेली, पर्वत

2. इन प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ –

क. रात बीतने पर क्या हुआ ?

ख. पर्वत की चोटी पर क्या उछली ?

ग. पंछी के पंख कैसे चमके ?

घ. कौन सबकी सहेली बन गई है ?

3. कविता की पंक्तियों को पूरा करो।

क. बीती रात हुआ ——————————————————

ख. झरनों के संग ——————————————————

ग. ——————————— की लहरों पर नाची।

घ. धरती के कोने–कोने तक ——————————————

4. पाठ में आए जोड़े वाले शब्द छाँटकर लिखो, जैसे– घर–आँगन

——————————— ———————————

——————————— ———————————

5. उल्टे अर्थ वाले शब्दों को ध्यान से पढ़ो।

सुबह	–	शाम	उतरी	–	चढ़ी
नई	–	पुरानी	आई	–	गई
धूप	–	छाँव	हँसना	–	रोना

6. का, की, के, को मिलाकर शब्द बनाओ और पढ़ो।

	का	की	के	को
उस	उसका	उसकी	—————	—————
किस	—————	—————	—————	—————
सब	—————	—————	—————	—————

गतिविधि :–

1. सूरज, चिड़िया और फूल के चित्र बनाओ।
2. किसी प्राकृतिक दृश्य का चित्र बनाकर अपने पोर्टफोलियो में लगाओ।

38HW8G

पाठ 16

नान्हे–नान्हे डग

डग , अब्बड़ , सुग्घर

नान्हे–नान्हे पाँव हमर,
आगू बढ़त जाबोन जी।
पढ़े ला कब्भू नइ छोड़न ,
हर दिन पढ़े ला जाबोन जी।

नान्हे–नान्हे हाथ हमर,
गड्ढा अबड़ बनाबो जी।
गड्ढा मन मा सुग्घर, बढ़िया
बिरवा अबड़ लगाबोन जी।

घर–दुवार ला सफा रखबो ,
गली ला सफा बनाबोन जी।
कइसे हम ला जीना चाही,
जी के हमन देखाबोन जी।

शिक्षण–संकेत – बच्चों को लय के साथ कविता पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। वे अपनी अलग लय के साथ भी पढ़ सकते हैं। बच्चों को बताएँ कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। उन्हें यह भी बताएँ कि मेहनत करने से कभी घबराना नहीं चाहिए, जो काम हाथ में लें उसे पूरा करके ही छोड़ना चाहिए। कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

38HSA4

पाठ 16

छोटे–छोटे कदम

कदम, खूब, सुंदर

छोटे–छोटे कदम हमारे,
आगे बढ़ते जाएँगे।
पढ़ना कभी न छोड़ेंगे हम,
हर दिन पढ़ने जाएँगे।

छोटे–छोटे हाथ हमारे,
गड्ढे खूब बनाएँगे।
इन गड्ढों में अच्छे, सुंदर,
पौधे खूब लगाएँगे।

घर–आँगन को साफ रखेंगे,
गलियाँ साफ बनाएँगे।
कैसे जीना हमें चाहिए,
जीकर हम दिखलाएँगे।

शिक्षण–संकेत – बच्चों को लय के साथ कविता पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। वे अपनी अलग लय के साथ भी पढ़ सकते हैं। बच्चों को बताएँ कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। उन्हें यह भी बताएँ कि मेहनत करने से कभी घबराना नहीं चाहिए, जो काम हाथ में लें उसे पूरा करके ही छोड़ना चाहिए। कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

डग = कदम, अब्बड़ = बहुत

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

कदम , आंगन , मेहनत , घबराना

2. ये प्रश्नमन के उत्तर बतावव –

क. पढ़ना काबर जरूरी हे ?

ख. रूख राई मन ले हमन ला का फायदा हे ?

ग. घर , सड़क , इस्कूल सबो जघा सफई काबर जरूरी हे ?

घ. कविता मा काखर बारे मा गोठियाय गे हे ?

3. खाल्हे लिखाय सब्द मन ले एक–एक ठन वाक्य बनाके बोलव –

मिहनत , फूल , गड्ढा , अँगना

4. अपन बारे मा लिखव –

5. पढ़व अउ समझव –

जाना	–	मैं जाथँव।	तुमन जाथव।	ओ हा जाथे।
पढ़ना	–	मैं पढ़थँव।	तुमन पढ़थव।	ओहा पढ़थे।
लिखना	–	.....	.....	.....
हँसना	–	.....	.....	.....
देखना	–	.....	.....	.....

शब्दार्थ

कदम = पग, खूब = बहुत

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ–

कदम, आँगन, मेहनत, घबराना

2. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ –

क. पढ़ना क्यों जरूरी है?

ख. पेड़–पौधों से हमें क्या लाभ हैं?

ग. घर, सड़क, स्कूल सभी जगह सफाई क्यों जरूरी है?

घ. कविता में किसके बारे में बात कही गई है?

3. निम्नलिखित शब्दों से एक–एक वाक्य बनाकर बोलो –

मेहनत, फूल, गड्ढा, आँगन

4. पढ़ो, समझो और लिखो –

गली	– गलियाँ	पेड़	– पेड़ों
कली	–	बैल	–
सखी	–	घर	–
चक्की	–	दिन	–

5. अपने बारे में लिखो –

6. पढ़ो और समझो –

जाना –	मैं जाता हूँ।	तुम जाते हो।	वह जाता है।
पढ़ना –	मैं पढ़ता हूँ।	तुम पढ़ते हो।	वह पढ़ता है।
लिखना –	.....	.....	.....
हँसना –	.....	.....	.....
देखना –	.....	.....	.....

7. पाठ मा जेन सब्द मन मा क, ह, ग, के उपयोग होइस हे, ओ मन ला लिखव–

जैसे –

क – कदम, ———————— ————————

ह – हम, ———————— ————————

ग – गली, ———————— ————————

8. अपन इस्कूल के बारे मा लिखव –

7. पाठ में जिन शब्दों में क, ह, ग, का उपयोग हुआ है, उन्हें लिखो– जैसे –

क – कदम, ———— ————

ह – हम, ———— ————

ग – गलियाँ, ———— ————

8. अपने स्कूल के बारे में लिखो।

पाठ 17

चित्रकोट जलप्रपात

मनभावन, जलप्रपात, गीत,
बूड़ना , बइठक कुरिया, मंजा

रिचा अउ रजनीश छुट्टी मा बस्तर घुमे बर आईन। इंखर ममा जगदलपुर मा रइथें। ममा के बइठक कुरिया मा चित्रकोट प्रपात के एकठन बहुत बड़े फोटू टँगाय रहिस। रजनीश हा ममा ले पूछिस–"ममा! प्रपात के ये फोटू हा कहाँ के हवय?"

ममा हा कहिस – " अरे! ये फोटू हा तो बस्तर के प्रपात के आय। हमन काली तुमन ला ये झरना ला देखाय बर लेगबो।"

दूसर दिन ममा हा किराया के जीप ले के आ गे। सबझन तियार होके बइठे रहिन। झटकुन सबझन जीप मा बइठगिन। चित्रकोट हा जगदलपुर ले अन्दाजन 40 कि.मी. दूरिहा हे। जीप 1 घंटा मा चित्रकोट पहुँचगे। जलप्रपात हा अब उखर आगू मा रहिस।

लगभग 30 मीटर (100 फीट) के ऊँचाई ले इन्द्रावती नदी इहाँ गिरथे। पानी के धार हा इहाँ दूध कस दिखथे। खाल्हे कोती जिहाँ धार गिरथे ऊहाँ ले कुहरा निकलत कस दिखत रहिस। पानी के गिरे ले जेन अवाज आवत रहिस ओहा गाना कस आनंद देवत रहिस।

अब ममा संग सबझन खाल्हे कोती आ गेन। इहाँ ले जलप्रपात हा अउ मनभावन लागत रहिस। सबझन जाके एकठन चट्टान ऊपर बइठ गिन। सबझन उहें बइठ के खाना खायेन। ओमन सब उहें बइठे–बइठे जलप्रपात के मंजा लेवत रहिन।

सुरुज हा अब बुड़इया रहिस। ममा हा कहिस – " इहाँ ले जाय के मन तो कोनो के नइ होवत हे, फेर अब हमन ला चलना चाही।

पाठ 17

चित्रकोट जलप्रपात

39FJDE

मनोरम	जलप्रपात	संगीत
अस्त होना	बैठक कक्ष	आनंद

ऋचा और रजनीश छुट्टियों में बस्तर घूमने आए हैं। इनके मामा जगदलपुर में रहते हैं। मामा की बैठक कक्ष में चित्रकोट जलप्रपात का एक बहुत बड़ा चित्र टँगा था। रजनीश ने मामा से पूछा, ''मामा जी! प्रपात का यह चित्र कहाँ का है?''

मामा ने कहा – ''अरे! यह चित्र तो बस्तर के ही जलप्रपात का है। हम तुम्हें कल यह प्रपात दिखाने ले चलेंगे।''

दूसरे दिन मामा किराए की जीप लेकर आ गए। सभी लोग तैयार होकर बैठे थे। जल्दी ही सब जीप में सवार हो गए। चित्रकोट जगदलपुर से लगभग 40 किलोमीटर दूर है। जीप 1 घंटे में चित्रकोट पहुँच गई। जलप्रपात अब उनके सामने था।

लगभग 30 मीटर (100 फीट) की ऊँचाई से इन्द्रावती नदी यहाँ गिरती है। जलधारा यहाँ दूध की तरह दिखाई दे रही थी। नीचे जहाँ धारा गिर रही थी, वहाँ से धुआँ–सा उठता दिखाई दे रहा था। पानी के गिरने से जो शोर हो रहा था, वह संगीत का आनंद दे रहा था। हवा के कारण जल की नन्ही–नन्ही बूँदें बड़ा आनंद दे रहीं थीं।

अब मामा के साथ सब लोग नीचे की तरफ आ गए। यहाँ से जलप्रपात और भी मनोरम लग रहा था। सभी लोग जाकर एक चट्टान पर बैठ गए। सबने वहीं बैठकर खाना खाया। वे सब वहीं बैठे–बैठे प्रपात का आनंद लेते रहे।

सूर्य अब अस्त होने ही वाला था। मामा ने कहा, ''यहाँ से हटने का जी तो किसी का नहीं है, पर अब हमें चलना चाहिए। मामा की आज्ञा थी।

चित्रकोट जलप्रपात

सबझन रेंगत–रेंगत झरना ला फेर देखिन। अब ओमन सबझन जीप डाहर बढ़े लागिन। चित्रकोट के झाँकी ला वो सबझन कभू नइ भुलाय।

शिक्षण संकेत :– चित्रकोट के जलप्रपात का चित्र प्रदर्शित करें। बच्चों से चित्र के संबंध में प्रश्न पूछें। पानी की बूँदें कैसी दिखाई दे रही थीं। पानी की धारा कैसी ध्वनि कर रही थी। चर्चा करें। पाठ पढ़ने के लिए हर विद्यार्थी को अवसर दिया जाए। पाठ में आए कठिन शब्दों को उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

जलप्रपात	=	जलप्रपात			
मनभावन	=	मनोरम			
गाना	=	संगीत	चट्टान	=	चट्टान
बुड़ना	=	अस्त होना	झाँकी	=	दृश्य
मंजा	=	आनंद	आदेस	=	आज्ञा

चित्रकोट जलप्रपात

सबने चलते–चलते प्रपात को फिर देखा। अब वे सब जीप की ओर बढ़ रहे थे। चित्रकोट का दृश्य वे सब कभी न भूल पाए।

शिक्षण संकेत :– चित्रकोट के जलप्रपात का चित्र प्रदर्शित करें। बच्चों से चित्र के संबंध में प्रश्न पूछें। पानी की बूँदें कैसी दिखाई दे रही थीं। पानी की धारा कैसी ध्वनि कर रही थी। चर्चा करें। पाठ पढ़ने के लिए हर विद्यार्थी को अवसर दिया जाए। पाठ में आए कठिन शब्दों को उनकी भाषा में बताएँ।

शब्दार्थ

जलप्रपात	=	चट्टानों को ऊपर से नीचे काटते हुए गिरता हुआ पानी			
मनोरम	=	मन को अच्छा लगने वाला			
संगीत	=	गाना	चट्टान	=	बड़े–बड़े पत्थर
अस्त होना	=	छिप जाना	दृश्य	=	जो दिखाई पड़ता है।
आनंद	=	खुशी	आज्ञा	=	आदेश

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

मनोरम , जलप्रपात , अस्त होना , आनंद , संगीत

2. प्रश्न मन के उत्तर देवव –

क. चित्रकोट जलप्रपात जगदलपुर ले कतका दूरिहा हे ?

ख. चित्रकोट हा कोन नंदीया के जलप्रपात आय?

ग. तुँहर ममा कहाँ रहिथे ?

3.पढ़ई, लिखई , ठंडा, बस स्टैण्ड, धार के प्रयोग करके एक–एक ठन वाक्य बोलव।

4. सही सब्द चुनव अउ खाली जघा मा लिखव –

(बूड़ने, जलप्रपात , मंजा , मनभावन , झाँकी)

क. चित्रकोट के –––––––––––––– उँखर आँखी के आगू आथे।

ख. उहीं बइठे–बइठे ओमन झरना के –––––––––––––– लेवत रिहिन।

ग. सुरुज अब –––––––––––––– वाला रहिस।

घ. ये –––––––––––––– के फोटू कहाँ के हवय ?

5. पढ़व अउ समझ के लिखव।

मेरा	–	मोर
हमारा	–	–––––––
तुम्हारा	–	–––––––
उसका	–	–––––––
किसका	–	–––––––

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

मनोरम, जलप्रपात, अस्त होना, आनंद, संगीत

2. इन प्रश्नों के उत्तर दो –

क. चित्रकोट जलप्रपात जगदलपुर से कितनी दूर है ?

ख. चित्रकोट किस नदी का जलप्रपात है ?

ग. तुम्हारे मामा कहाँ रहते हैं ?

3. पढ़ना, लिखना, शीतल, बस–स्टैंड, धारा का प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बोलो।

4. सही शब्द चुनकर खाली जगह में लिखो –

(अस्त, जलप्रपात, आनंद, मनोरम दृश्य)

क. चित्रकोट का ———————— उनकी आँखों के आगे था।

ख. वहीं बैठे–बैठे वे प्रपात का ———————— ले रहे थे।

ग. सूर्य अब ———————— होने ही वाला था।

घ. यह ———————— का चित्र कहाँ का है?

5. पढ़ो और समझकर लिखो।

मेरा	–	मेरे	स्थान	–	स्थानों
हमारा	–	———	मकान	–	———
तुम्हारा	–	———	दुकान	–	———
उसका	–	———	पहाड़	–	———
किसका	–	———	सड़क	–	———

6. सोंचव , समझव अउ लिखव।

	में	हमन	तुमन	ओहा	ओमन
खाना	खाथन	खाथो	खाथन	खाथे	खाथें
गाना	–––––	–––––	–––––	–––––	–––––
खेलना	–––––	–––––	–––––	–––––	–––––
दउड़ना	–––––	–––––	–––––	–––––	–––––

7. ये सब्द मन के उल्टा मायने वाला सब्द मन ला लिखव –

लकर–लकर –
ऊँच –
खाल्हे –
गिरय –
हौ –
दिनमान –
जागे –
सवाल –
आना –

8. का तुमन कभू कोनो नदी, झरना या जलप्रपात देखे हव ? ओखर बारे मा लिखव।

6. सोचो, समझो और लिखो।

	मैं	हम	तुम	वह	वे
खाना	खाता हूँ।	खाते हैं।	खाते हो।	खाता है।	खाते हैं।
गाना	—————	—————	—————	—————	—————
खेलना	—————	—————	—————	—————	—————
दौड़ना	—————	—————	—————	—————	—————

7. इन शब्दों के उल्टे अर्थ वाले शब्दों को लिखो –

जल्दी – दिन –

ऊँचा – जागा –

नीचे – प्रश्न –

गिरना – आना –

हाँ –

8. गतिविधि :–

'मामा'' शब्द को उल्टा लिखने पर 'मामा' ही बनता है। ऐसे ही दूसरे शब्द बनाओ।

9. क्या तुमने कभी कोई नदी, झरना या जलप्रपात देखा है? उसके बारे में लिखो।

पाठ 18

का हे ओखर नाँव ?

पंछी , आखर , बिहनिया , भीनसारे , कलगी , मनखे , पुँछी

1. बिहनिया ले घर के छानी मा, मिलथे गाँव–गाँव।
करिया रंग के पंछी होथे, करथे काँव–काँव।।
बतावव का हे ओखर नाव ———————— ?

2. चाँदी जइसन अबड़ चमकथे , घर हे ओखर पानी।
तीन आखर के नाँव निराला, वो हे पानी के रानी।।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

3. कुकरूस–कूँ बोलत रहिथे, रोज बिहनिया उठके।
मूँड़ मा लाल–लाल कलगी हे, रेंगथे बहुँत–अकड़के।।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

4. जंगल के राजा कहाथे, खाके मास गरजथे।
ओला देखे के सब लुकाथें, पाना तक नइ बाजे।।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

शिक्षण संकेत – इस पाठ में पहेलियाँ पूछी गई हैं। पहेलियों से बच्चे परिचित हैं। हर पहेली को बच्चों से पढ़वाएँ। उत्तर के लिए संकेत दें और पहेली का हल पाठ्यपुस्तक में दिए गए स्थान पर पेंसिल से लिखवाएँ। कुछ अन्य पहेलियाँ पूछने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। कक्षा में दो दल बनाकर बच्चों से परस्पर पहेलियाँ पूछने को कहें। बच्चों को पहेली का भाव समझाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

पाठ 18

क्या है उसका नाम ?

पक्षी, अक्षर, तड़के, कलगी, मानुष, पूँछ

1. बड़े सवेरे घर की छत पर, मिलता गाँव–गाँव।
काले रंग का पक्षी होता, करता काँव–काँव।।
बोलो क्या है उसका नाम ------ ?

2. चाँदी जैसी खूब चमकती, घर है उसका पानी।
तीन अक्षर का नाम निराला, है वह जल की रानी।।
बोलो क्या है उसका नाम ------ ?

3. कुकड़ूँ–कूँ बोला करता है, रोज सवेरे तड़के।
सिर पर लाल–लाल कलगी है, चलता खूब अकड़ के।।
बोलो क्या है उसका नाम ------ ?

4. जंगल का राजा कहलाता, खाकर माँस गरजता।
उसे देखकर सब छिप जाते, पत्ता नहीं खड़कता।।
बोलो क्या है उसका नाम ------ ?

शिक्षण संकेत – इस पाठ में पहेलियाँ पूछी गई हैं। पहेलियों से बच्चे परिचित हैं। हर पहेली को बच्चों से पढ़वाएँ। उत्तर के लिए संकेत दें और पहेली का हल पाठ्यपुस्तक में दिए गए स्थान पर पेंसिल से लिखवाएँ। कुछ अन्य पहेलियाँ पूछने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। कक्षा में दो दल बनाकर बच्चों से परस्पर पहेलियाँ पूछने को कहें। बच्चों को पहेली का भाव समझाएँ। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ उनकी भाषा में बताएँ।

5. रूख राई मा कूदे–फाँदे, झुँड बना के रहिथे।
मनखे जइसे तन हे ओहर, पूँछी झुलावत रहिथे।।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

6. रंग–बिरंग के पंख हे जेखर, फूल मन मा झुमथे।
हाथ बढ़ाबे त उड़ जाथे, बगिया मन मा घुमथे।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

7. नँदिया के तिर मा बइठे रहिथे, मछरी खाये ले काम।
लंबा गोड़, लंबा गरदन बतावव जी का हे नाँव।।
बतावव का हे ओखर नाँव ———— ?

शब्दार्थ

पखेरू	=	पक्षी	अटिया के	=	अकड़ के
मनखे	=	मनुष्य	तन	=	शरीर
निराला	=	अनोखा	हाथ आना	=	प्राप्त होना
कलगी	=	मुर्गे की चोटी	पाना नइ डोलना	=	पूर्ण शांति होना
खड़कना	=	खड़–खड़ की आवाज होना			

अभ्यास

1. खाल्हे मा लिखाय सब्द मन के मायने अपन भाखा मा बतावव –

पक्षी , अक्षर , कलगी , मानुष , पूँछ , तड़के

5. पेड़ों पर वह उछले–कूदे, झुंड बनाकर रहता।
मानुष जैसी काया उसकी, पूँछ झुलाता रहता।।
बोलो क्या है उसका नाम ——— ?

6. रंग–बिरंगे पंखोंवाली, फूलों पर मँडराती।
हाथ बढ़ाओ तो उड़ जाती, हाथ नहीं वह आती।।
बोलो क्या है उसका नाम ——— ?

7. नदी किनारे बैठा रहता, मछली खाना काम।
लंबी टाँगें, लंबी गर्दन, बोलो जी क्या नाम ?
बोलो क्या है उसका नाम ——— ?

शब्दार्थ

पक्षी	=	चिड़िया	अकड़ना	=	ऐंठना
मानुष	=	मनुष्य, आदमी	काया	=	शरीर
निराला	=	अनोखा	हाथ आना	=	प्राप्त होना
कलगी	=	मुर्गे की चोटी	पत्ता नहीं खड़कना	=	पूर्ण शांति होना
खड़कना	=	खड़–खड़ की आवाज होना			

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में बताओ –

पक्षी, अक्षर, तड़के, कलगी, मानुष, पूँछ

2. लकीर खींच के सही जोड़ी बनावव –

काँव–काँव	–	बेंदरा
कूहू–कूहू	–	कुकरा
खों–खों	–	कउँवा
टें–टें	–	कोयली
कुकरूस–कूँ	–	सुआ

3. एक सब्द मा उत्तर लिखव –

क. लाल कलगी काखर मूड़ मा होथे ? .....

ख. फूल मा कोन झूमथे ? .....

ग. जंगल के राजा कोन कहाथे ? .....

घ. पानी के रानी कोन ला कहिथें ? .....

ङ. रूख मा कूदा–फाँदी कोन करथे ? .....

4. एक जइसे तुक वाले सब्द लिखव –

जैसे– पाला – माला – ताला – नाला

ऐसी – ————————, ————————, ————————

आता – ————————, ————————, ————————

राजा – ————————, ————————, ————————

खाना – ————————, ————————, ————————

2. रेखा खींचकर सही जोड़ी बनाओ।

काँव–काँव	–	बंदर
कुहू–कुहू	–	मुर्गा
खों–खों	–	कौआ
टें–टें	–	कोयल
कुकडूँ–कूँ	–	तोता

3. एक–एक शब्द में उत्तर लिखो – **उत्तर**

क. लाल कलगी किसके सिर पर होती है ? .....

ख. फूलों पर कौन मँडराता है ? .....

ग. कौन जंगल का राजा कहलाता है ? .....

घ. जल की रानी किसे कहते हैं ? .....

ड. पेड़ों पर उछल–कूद कौन करता है ? .....

4. समान तुक वाले शब्द लिखो।

जैसे– पाला – माला – ताला – नाला

ऐसी – ————————, ————————, ————————

आता – ————————, ————————, ————————

राजा – ————————, ————————, ————————

खाना – ————————, ————————, ————————

5. गतिविधि :–

दे गे जानवर–पंछी मन के बोली के नाटक करव –

क. कउवाँ – ख. कोयली –

ग. गाय – घ. गदहा –

ड. बघवा – च. मेंचका –

6. फोटू बनावव।

तितली, मछरी

5. गतिविधि :–

दिए गए पशु–पक्षियों के बोलने का अभिनय करो–

क. कौआ – ख. कोयल –

ग. गाय – घ. गधा –

ड. शेर – च. मेंढक –

6. चित्र बनाओ।

तितली, मछली

7. स्कूल के तिर–तखार मा तुमन ला कोन–कोन जानवर या पंछी दिखथें–लिखव।

पंछी ....

जानवर ....

8. स्थानीय/परिवेशीय जनऊला लइका मनले बोलवाव –

कम से कम दू ठन जनऊला घर ले पूछ के आवव।

9. आने आने पत्र–पत्रिका ले पंछी अउ जानवर के फोटू खोज के अपन कॉपी मा चिपकावव अउ ओखर नाव लिखव।

7. शाला के आसपास आपको कौन – कौन से जानवर या पक्षी दिखाई देते हैं – लिखो।

पक्षी ....

जानवर ....

8. परिवेशीय पहेलियाँ बच्चों से बुलवाएँ –

कम से कम दो पहेलियाँ बच्चे घर से पूछकर आएँ।

9. विभिन्न पत्र – पत्रिकाओं से पक्षियों और जानवरों के चित्र खोजकर उन्हें अपनी कापी में चिपकाओ और उनके नाम लिखो ।

3HY3AU

पाठ 19

साहसी बनव

परसिद्ध , नजारा , हिम्मत , मनखे

गंगा नदी के तीर मा एकठन परसिद्ध शहर हे बनारस। बात तइहा के आय। ओ दिन मा बनारस मा गंगा के घाट मा अब्बड़ बेंदरा हो गे रहिस। ओमन अतका निडर हो गे रहिस के मनखे मन के हाथ ले समान ला झटक लेवत रहिस। खाय के समान ला तो ओमन छोड़बेच नइ करत रहिस।

एक दिन के बात आय। नरेन्द्र नाँव के एक झन लइका हा बजार ले लहुँटके आवत रहिस। ओह अपन खाँध मा एकठन झोला टाँगे रिहिस। नरेन्द्र हा थोड़िच दूरिहा गे रहिस के एकठन बेंदरा हा ओखर पाछू लग गे। बेंदरा ला पाछू आवत देखके नरेन्द्र हा लकर–लकर रेंगे लागिस। बेंदरा घलो लकर–लकर आवन लागिस।

बेंदरा ला तिर मा आवत देख के नरेन्द्र हा भागे लागिस। एकझन भले मनखे हा येला देखत रहिस। ओ हा नरेन्द्र ला रोकिस अउ कहिस – ''भागत काबर हस ?''

3I7YCH

पाठ 19

साहसी बनो

प्रसिद्ध, दृश्य, हिम्मत, व्यक्ति

गंगा नदी के किनारे एक प्रसिद्ध शहर है बनारस। बात काफी पुरानी है। उन दिनों बनारस में गंगा के घाट पर बहुत अधिक बंदर हो गए थे। वे इतने निडर थे कि लोगों के हाथ से सामान छीन लेते थे। खाने का सामान तो वे छोड़ते ही नहीं थे।

एक दिन की बात है। नरेन्द्र नाम का एक लड़का बाजार से वापस आ रहा था। उसने कंधे पर एक झोला लटका रखा था। नरेन्द्र थोड़ी दूर ही गया होगा कि एक बंदर उसके पीछे लग गया। बंदर को पीछे आते देख नरेन्द्र ने अपनी चाल बढ़ा दी। बंदर भी तेज चलने लगा।

बंदर को करीब आते देख नरेन्द्र भागने लगा। इस सारे दृश्य को एक सज्जन देख रहे थे। उन्होंने नरेन्द्र को भागने से रोका और कहा– ''भागते क्यों हो?''

नरेन्द्र बोलिस – ''का करँव, बेंदरा पाछू लगे हे।'' ओ मनखे हा कहिस – '' डर्रा के भाग झन। तैंहर डर्रावत हस तेखर सेती ओहा तोला डर्रावावत हे। तैं ठाड़ हो जा अउ हिम्मत ले ओखर मुकाबला कर। ''

नरेन्द्र हा हिम्मत देखईस। ओ ठाड़ हो गे। ओखर ठाड़ होए ले बेंदरा घलो ठाड़ हो गे। नरेन्द्र हा अपन झोला ला उठाईस अउ मारे बर दउड़िस। नरेन्द्र ला अपन डाहर आवत देख के बेंदरा हा भाग गिस। लइका ला साहस के नवा सीख मिलिस। उही लइका नरेन्द्र हा आघू चलके दुनिया मा स्वामी विवेकानंद के नाँव ले परसिद्ध होईस।

नरेन्द्र बोला– ''क्या करूँ, बंदर पीछे पड़ा है।'' उस व्यक्ति ने कहा– ''डरकर भागो मत। तुम डर रहे हो इसलिए वह डरा रहा है। रुको, खड़े होकर हिम्मत से उसका मुकाबला करो।''

नरेन्द्र ने हिम्मत दिखाई। वह खड़ा हो गया। उसके खड़े होते ही बंदर भी खड़ा हो गया। नरेन्द्र ने अपना झोला उठाया और मारने दौड़ा। नरेन्द्र को अपनी ओर आता देखकर बंदर भाग गया। बालक को साहस की यह नई सीख मिली। वही बालक नरेन्द्र आगे चलकर दुनिया में स्वामी विवेकानंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

शिक्षण संकेत – स्वामी विवेकानंदजी का चित्र कक्षा में दिखाएँ। उनके विषय में संक्षेप में बताएँ। बच्चों को बताएँ कि एक बार अमेरिका में संसार के धर्मों के संदर्भ में एक बहुत बड़ी सभा हुई उसमें स्वामी जी ने जो भाषण दिया उसे दुनियाभर के लोगों ने सराहा। साहस और दुस्साहस में अंतर उदाहरण देते हुए समझाएँ।

शब्दार्थ

परसिद्ध	=	प्रसिद्ध	भले मनखे	=	अच्छा आदमी
हिम्मत	=	साहस	साहसी	=	निडर होय का गुन
मुकाबला	=	सामना करना			

अभ्यास

1. खाल्हे लिखाय प्रश्नमन के उत्तर अपन सब्द मा बतावव –

क. बनारस के दूसर नाँव काय हे ?

ख. स्वामी विवेकानंद के नानपन के काय नाँव रहिस ?

ग. नरेन्द्र काबर दउड़त रहिस ?

घ. अगर लइका हा बेंदरा ले डर्राके भागतेच रइतिस त का होतिस ?

ङ. अगर कुकुर तुँहर पाछू दऊँड़े बर लागिस त तुमन का करहू ?

च. स्वामी विवेकानंद हा भारत के महान पुरुष आय। अपन प्रदेस के कोनो एकझन महापुरुष के नाव बतावव।

2. खाल्हे मा आधा सब्द दे गे हे। ढ़, ड़ लगाके सब्द ला पूरा करव –

1. च.....	2. प.....	3. ब.....
4. च.....ना	5. प.....ना	6. ब.....ना
7. दौ.....ना	8. ल.....का	9. पक.....ना

3. खाल्हे मा लिखाय कथन तुँहर हिसाब से सही हे कि गलत। लिखव –

क. बजार मा नरेन्द्र बेंदरा के पाछू लगगे। (————)

ख. बेंदरा नरेन्द्र के झोला ला झटक के भागगे। (————)

ग. बेंदरा हा नरेन्द्र ले डर्राके भाग गे। (————)

4. आवव, सब्द के अन्ताक्षरी बनाबो –

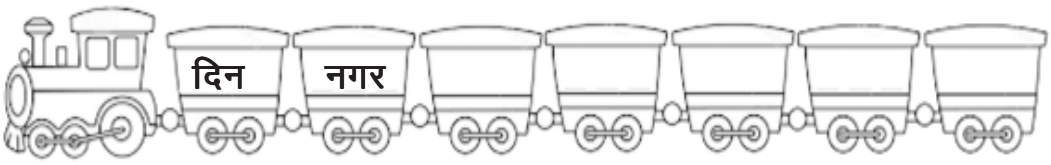

शिक्षण संकेत – स्वामी विवेकानंदजी का चित्र कक्षा में दिखाएँ। उनके विषय में संक्षेप में बताएँ। बच्चों को बताएँ कि एक बार अमेरिका में संसार के धर्मों के संदर्भ में एक बहुत बड़ी सभा हुई उसमें स्वामी जी ने जो भाषण दिया उसे दुनियाभर के लोगों ने सराहा। साहस और दुस्साहस में अंतर उदाहरण देते हुए समझाएँ।

शब्दार्थ

प्रसिद्ध	=	मशहूर	सज्जन	=	अच्छा आदमी
हिम्मत	=	साहस	साहसी	=	निडर होने का गुण
मुकाबला	=	सामना करना			

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में बताओ –

क. बनारस का दूसरा नाम क्या है ?

ख. स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम क्या था ?

ग. नरेन्द्र क्यों दौड़ रहा था ?

घ. अगर बालक बंदरों से डरकर भागता रहता तो क्या होता ?

ड. अगर कुत्ता तुम्हारे पीछे दौड़े तो तुम क्या करोगे ?

च. स्वामी विवेकानंद भारत के महान पुरुष थे। अपने प्रदेश के किसी एक महापुरुष का नाम बताओ।

2. नीचे अधूरे शब्द दिए गए हैं। ढ़, ड़ लिखकर शब्द पूरे करो–

1. च.....	2. प.....	3. ब.....
4. च.....ना	5. प.....ना	6. ब.....ना
7. दौ.....ना	8. ल.....का	9. पक.....ना

3. नीचे लिखे कथन तुम्हारे अनुसार सही हैं या गलत। लिखो।

क. बाजार में नरेन्द्र बंदर के पीछे लग गया। (————)

ख. बंदर नरेन्द्र का झोला लेकर भाग गया। (————)

ग. बंदर नरेन्द्र से डरकर भाग गया। (————)

4. आओ शब्दों की अंताक्षरी बनाएँ –

3IGUE5

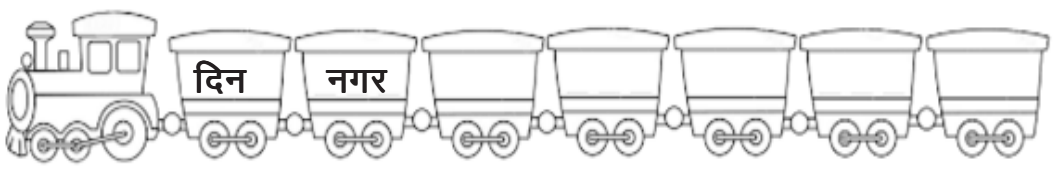

यातायात सिग्नल

यातायात विद्युत सिग्नल सुरक्षित आवागमन में हमारी सहायता करती है। ये हमें सिग्नल पर सुरक्षित चलने एवं रूकने के लिए निर्देश देती है। इनके तीन रंग होते हैं। सभी रंगों का अपना महत्व होता है। आइए इन रंगों के बारे में जानें कि ये कैसे काम करते हैं :–

लाल बत्ती जलने पर हमेशा स्टॉप लाईन के पीछे रुकें।

पीली बत्ती जलने पर यदि स्टाप लाइन पार कर चुके हैं तो तुरंत आगे बढ़ें।

हरी बत्ती जलने पर रास्ता साफ होता है आगे बढ़ें।

उत्तर दो

सही शब्द चुनिए –

प्रश्न 1. यातायात विद्युत सिग्नल में .....रंग होते हैं। (एक/दो/तीन/चार)

प्रश्न 2. लाल बत्ती जलने पर हमें ..... चाहिए। (चलना/रुकना/आगे बढ़ना)

प्रश्न 3. पीली बत्ती जलने पर हमें ..... चाहिए। (चलना/रुकना/आगे बढ़ना)

प्रश्न 3. हरी बत्ती जलने पर हमें ..... चाहिए। (चलना/रुकना/आगे बढ़ना)